॥ खण्डकाव्य ॥

1 मुक्ति-दूत

(डॉ० राजेन्द्र मिश्र)

आगरा, बस्ती, गाजीपुर, फतेहपुर, बाराबंकी, उन्नाव जनपदों के लिए निर्धारित।

सारांश

प्रथम सर्ग

प्रथम-सर्ग में कवि ने महात्मा गांधी को युगपुरुष के रूप में स्वीकार किया है तथा उनके चरित्र की महानता का वर्णन किया है। महात्मा गांधी भारत के ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व के संकटों का निवारण करने के लिए उसी प्रकार अवतरित हुए जिस प्रकार राम, कृष्ण, गौतम बुद्ध, ईशा, मुहम्मद साहब तथा गुरु गोविन्द सिंह आदि भगवान् के रूप में अवतरित हुए। जिस प्रकार लिंकन ने अमेरिका का तथा नेपोलियन ने फ्रांस का उद्धार किया था उसी प्रकार गांधी जी ने भारतवर्ष को अंग्रेजी दासता से मुक्ति दिलायी।

महात्मा गांधी का जन्म गुजरात के पोरबन्दर नामक स्थान पर हुआ था। इनके पिता श्री करमचन्द गांधी थे। महात्मा गांधी के जीवन पर अपनी माता के चरित्र की गहरी छाप थी। बचपन में ही सत्य हरिश्चन्द्र और श्रवण कुमार के आदर्श चरित्र से महात्मा गांधी बहुत प्रभावित हुए थे। गांधी जी को हरिजन तथा हिन्दुस्तानी दोनों से ही अगाध स्नेह था। वे आजीवन विभिन्न समस्याओं से जूझते रहे, उनके अथक् प्रयासों के फलस्वरूप भारत को आजादी प्राप्त हो सकी।

द्वितीय सर्ग

खण्डकाव्य की मूल कथा का प्रारम्भ द्वितीय सर्ग से ही होता है। एक बार गांधी जी ने स्वप्न में अपनी माता को देखा। उन्हें स्वप्न में देखकर गांधीजी को अपनी माता की समस्त शिक्षाएँ याद हो आयीं। उनकी माता ने उन्हें समझाया था कि गिरते हुए को सहारा दो तथा देश के भूखे व्यक्तियों को भोजन दो। माताजी की वाणी गांधीजी के हृदय को स्पर्श कर गयी। उन्होंने मन-ही-मन संकल्प किया कि वे दीन-हीन व्यक्तियों को सहारा देंगे तथा अपनी जन्मभूमि के बन्धन काट डालेंगे। उनके मन में कुछ आदर्श विचार इस प्रकार उत्पन्न हुए– सभी भारतवासी सगे भाई हैं। यदि देश का एक भी बालक नंगा-भूखा है तो मुझे सुख किस प्रकार मिल सकता है? अछूतों को भी उसी ईश्वर ने पैदा किया है। इन अछूतों ने उच्च वर्णों के प्रति सहानुभूति प्रकट की है फिर इनके प्रति भेद-भाव कैसे रखा जा सकता है। निम्न जाति में पैदा हुए सत्यकाम को जब गौतम ऋषि शिक्षा दे सकते हैं और शबरी को भगवान् राम स्वयं अपना प्रेम अर्पित कर सकते हैं तो फिर इन हरिजनों को हृदय से अलग करना कैसे सम्भव है।

गांधीजी विचार करते हैं कि देश में व्याप्त भेद-भाव की भावना को मिटाना ही होगा। गरीब और अमीर का भेद ईश्वर का नहीं बल्कि हमारा बनाया हुआ है। हरिजन के मन्दिर में प्रवेश करने से यदि मन्दिर अपवित्र हो जाता है तो उस मन्दिर में भगवान् का वास बिल्कुल नहीं है। यही सोचकर गांधीजी ने अपने आश्रम में रहने के लिए हरिजनों को आमन्त्रित किया था। गांधीजी के इस कार्य की प्रतिक्रिया हुई। जनता ने आश्रम को चन्दा देने से मना कर दिया। आश्रम के प्रबन्धक मगनलाल के निराशाजनक शब्दों को सुनकर गांधीजी क्रोधित हो उठे। उनके मन में अभी अफ्रीका में हुए अपमान की स्मृति शेष थी। जहाँ काले-गोरे, ऊँच-नीच का भेदभाव व्याप्त था। गांधीजी ने कहा कि, यदि जनता आश्रम के लिए चन्दा नहीं देती है तो मैं हरिजनों की बस्ती में ही रह लूँगा, पेड़ के नीचे सो लूँगा, किन्तु मैं आदमी-आदमी में भेद नहीं कर सकता। मेरे जीते जी घृणा और द्वेष नहीं चल सकता। पहले देश आजाद हो जाय फिर मैं हरिजन समस्या का भी निवारण करूँगा। गाँधीजी के इस कथन से आश्रमवासियों में नवीन चेतना उत्पन्न हुई। वे गांधीजी के असाधारण गुणों से भी परिचित थे। एक बार गांधीजी ने स्वप्न में गोपालकृष्ण गोखले को देखा। गोपालकृष्ण गोखले ने गांधीजी को स्वतन्त्रता के मार्ग पर अनवरत चलने की प्रेरणा दी। गोखले ने आशा प्रकट की कि गांधीजी ही भारतवर्ष के मुक्तिदूत बनेंगे।

तृतीय सर्ग

इस सर्ग में भारत की विपन्नता और अंग्रेजों के अत्याचारों का वर्णन किया गया है। भारतवासी अपमान का जीवन जी रहे थे। केवल वही लोग सुखी थे जो अंग्रेजों के चाटुकार थे। गांधीजी ने भारत की दुर्दशा को ठीक प्रकार से समझा। उन्होंने अंग्रेजों के प्रति पहले तो नम्रता की नीति अपनायी, किन्तु अंग्रेजों का हृदय बदलता हुआ न देखकर उन्होंने उनके विरुद्ध 'सविनय सत्याग्रह' आन्दोलन चलाया। इसी समय विश्वयुद्ध छिड़ गया। गांधीजी को यह आशा थी कि विश्वयुद्ध में अंग्रेजों की सहायता करने से उनके मन में भारतीयों के प्रति अधिक सहानुभूति पैदा हो जायेगी। अतः उन्होंने देशवासियों को अंग्रेजों की सहायता करने का आह्वान किया, परन्तु युद्ध में जीतने के बाद अंग्रेजों ने भारतीयों पर और अधिक अत्याचार किये। अंग्रेजों द्वारा बनाये गये काले कानून का गांधीजी ने विरोध किया। देश के महान् नेता– जवाहरलाल नेहरू, बालगंगाधर तिलक, महामना मदनमोहन मालवीय, जिन्ना, सरदार पटेल आदि उनके साथ संघर्ष में कूद पड़े। इन्हीं दिनों जलियाँवाला बाग की अमानवीय घटना घटित हुई। अंग्रेजों ने निरपराध भारतीयों को बन्दूक की गोली से भून डाला।

इस दर्दनाक घटना से गांधीजी का हृदय रोष एवं दुःख से भर गया। अब उन्होंने यह अच्छी तरह से समझ लिया कि भारत में अंग्रेज जाति अधिक दिनों तक नहीं रह सकती है।

चतुर्थ सर्ग (आन्दोलन सर्ग)

इस सर्ग में गांधीजी द्वारा चलाये गये विभिन्न आन्दोलनों का वर्णन किया गया है। अगस्त, 1920 ई० में गांधीजी ने असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ किया। जनता ने विदेशी सामान का बहिष्कार किया। अंग्रेजों द्वारा दी गयी उपाधियों को लौटा दिया तथा नौकरियों से त्याग-पत्र दे दिया। इस असहयोग आन्दोलन को देखकर अंग्रेजों को बड़ी निराशा हुई। गांधीजी ने 'साइमन कमीशन' का भी विरोध किया। भारतीयों के द्वारा किये गये इस तिरस्कार के परिणामस्वरूप अंग्रेज हिंसा पर उतर आये। इसी आन्दोलन में पंजाब केसरी लाला लाजपतराय भी सम्मिलित हो गये। सम्पूर्ण देश में हिंसक क्रान्ति प्रारम्भ हो गयी। गांधीजी ने भारतीय जनता को समझाया और उसे अहिंसा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। उन्होंने नमक कानून तोड़ने के लिए डाण्डी यात्री की। उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। इसके बाद सम्पूर्ण देश में आन्दोलन छिड़ गया। कुछ दिनों बाद गांधीजी ने 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' आन्दोलन प्रारम्भ किया। उनका यह नारा सम्पूर्ण देश में गूँजने लगा। इस आन्दोलन में विदेशी वस्तुओं की होली जलायी गयी, थानों में आग लगा दी गयी, रेलवे लाइनों को उखाड़ फेंका गया और सड़कों तथा पुलों को तोड़ दिया गया। आन्दोलनकारियों द्वारा सम्पूर्ण शासन व्यवस्था को अस्त-व्यस्त कर दिया गया। इस समय अंग्रेजों का दमन चक्र भी सीमा को पार कर गया था। गांधीजी ने अनशन प्रारम्भ कर दिया। इसी समय कारावास में बन्द उनकी धर्मपत्नी की मृत्यु हो गयी। गांधीजी इस आघात से क्षण भर के लिए व्याकुल अवश्य हुए, किन्तु पत्नी के स्वर्गवास ने अंग्रेजों के विरुद्ध उनके आन्दोलन को और अधिक दृढ़ता प्रदान की।

पंचम सर्ग

खण्डकाव्य के पंचम सर्ग में अंग्रेजों की निराशा का वर्णन किया गया है। 1945 ई० में द्वितीय विश्वयुद्ध के समाप्त हो जाने के बाद विश्व की राजनीति में भी परिवर्तन हुआ। इंग्लैण्ड में चुनाव हुए और वहाँ पर मजदूर दल की सरकार बनी। इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री एटली ने यह घोषणा की कि जून, 1947 ई० से पूर्व ही अंग्रेज भारत छोड़ देंगे। इस सूचना से सम्पूर्ण देश में प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी। किन्तु इसी समय अंग्रेजों के षड्यन्त्र और मुस्लिम लीग की हठधर्मिता से पाकिस्तान बनाने की बात भी सामने आयी। मोहम्मद अली जिन्ना पाकिस्तान बनाने की बात पर अड़े रहे। परिणाम यह हुआ कि 15 अगस्त, 1947 ई० को भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त होने के साथ-साथ देश दो टुकड़ों में विभाजित हो गया। नोआखाली में साम्प्रदायिक दंगे भड़क उठे। इससे गांधीजी को बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने साम्प्रदायिक दंगों को शान्त करने का भरसक प्रयत्न किया।

इस प्रकार भारत के स्वतन्त्रता संग्राम का अन्त हो गया, परन्तु देश के विभाजन से गांधीजी को अपार दुःख हुआ। उन्होंने देश की बागडोर जवाहरलाल नेहरू को सौंपकर सन्तोष की सांस ली।

खण्डकाव्य के अन्त में गांधीजी साबरमती के आश्रम में बैठकर देश के प्रति किये गये अपने महान् कार्यों का विश्लेषण करते हुए दिखाये गये हैं। वे भारत के उज्ज्वल एवं मंगलमय भविष्य की कामना करते हैं और इसी के साथ खण्डकाव्य की कथा समाप्त हो जाती है।

|| अभ्यास प्रश्न ||

1. 'मुक्ति-दूत' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग की कथा संक्षेप में प्रस्तुत कीजिए। **(2016CA,CF,17AF,20MB,MF)**
2. 'मुक्ति-दूत' खण्डकाव्य के मुख्य पात्र की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। **(2016CE,17AB,18HA,HF, 19AD,AG,20MB,ME)**

3. 'मुक्ति-दूत' खण्डकाव्य की कथावस्तु को संक्षेप में लिखिए। **(2016CB,17AA,AB,AC,18HA,19AE,AG,20MA)**
4. 'मुक्ति-दूत' खण्डकाव्य के आधार पर महात्मा गाँधी का चरित्र–चित्रण कीजिए। **(2016CE,17AB,18HA,HF, 19AD,AG,20MD,ME,MA,MF)**
5. 'मुक्ति-दूत' खण्डकाव्य के द्वितीय सर्ग की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए। **(2017AE,20MC,MD,MF)**
6. 'मुक्ति-दूत' खण्डकाव्य के पंचम सर्ग की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए। **(2020MC)**
7. 'मुक्ति-दूत' के चतुर्थ सर्ग की घटनाओं का सार अपने शब्दों में लिखिए।
8. 'मुक्ति-दूत' खण्डकाव्य के प्रथम सर्ग की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए।

●●

2 ज्योति जवाहर

(श्री देवीप्रसाद शुक्ल 'राही')

कानपुर, प्रतापगढ़, मिर्जापुर, ललितपुर, रामपुर, गोण्डा जनपदों के लिए निर्धारित।

सारांश

खण्डकाव्य के आरम्भ में कवि विषय-प्रवेश के अन्तर्गत सर्वप्रथम पं० जवाहरलाल नेहरू के निधन पर उन्हें सह-अस्तित्व के सरगम, अहिंसा के अनूठे छन्द, मानवता के संगम, जागरण के काव्य, युग की प्रेरणा, विधाता के अछूते ग्रन्थ, मनु के मन्त्र आदि अनेक विशेषणों से सम्बोधित करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

कथा का प्रारम्भ पं० नेहरू के अलौकिक दिव्य पुरुष के रूप में अवतार से होता है जिसमें सूर्य की ज्योति है, चाँद की सुन्दरता है, हिमालय का स्वाभिमान है, सागर की गम्भीरता है, हवा की अबाध गति है, धरती-सा धैर्य है। भारत की मिट्टी में उनका पालन-पोषण हुआ। जन्मभूमि गंगा-जमुना का संगम इलाहाबाद है। पूज्य बापू के कर्म योग की प्रेरणा मिलती है। नेहरू और बापू का मिलन राम-वशिष्ठ अथवा मोहन और युधिष्ठिर के समान है; यथा–

उसका आशीष और तेरा, नत मस्तक ही करता प्रणाम।
यों लगा कि जैसे गुरु वशिष्ठ, के चरणों पर हों झुके राम॥
अथवा मोहन के चरणों पर हो झुका युधिष्ठिर का माथा।
या खोज रहा हो फिर भारत अपनी खोयी गौरव गाथा॥

पं० नेहरू के अखण्ड ज्योति के रूप में इस धरा-धाम पर अवतीर्ण होने पर कवि कल्पना के अनुसार भारत का खण्ड-खण्ड अपने अखण्ड दिव्य रत्नों को नायक पर न्योछावर करने को आतुर को उठता है। अहिंसा के अग्रदूत को शिवाजी की तलवार सौंपने की योजना महाराष्ट्र बनाता है तो उसे शान्ति और अहिंसा के युग के लिए अनुपयुक्त बतलाया जाता है। इस पर महाराष्ट्र हिंसा और अहिंसा को परिभाषित करता है–

अत्याचारी के चरणों पर, झुक जाना भारी हिंसा है।
पापी का शीश कुचल देना, जो हिंसा नहीं अहिंसा है॥

तदनन्तर अतीत से प्रेरणा लेकर वर्तमान परिवेश में नया मोड़ देने और स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए प्रेरित करने हेतु गुरु रामदास की राष्ट्रीय चेतना, सन्त ज्ञानेश्वर का कर्मवाद, लोकमान्य तिलक का 'करो या मरो' का उपदेश, आदि सबकुछ लोकनायक पर न्योछावर किये जाते हैं। फिर पराधीनता के युग में संघर्षों से टकराने की क्षमता प्रदान करके उसके लिए राजस्थान लोकनायक को मन्त्र देता है–

ले लो मेरे जीवन की निधि, जीवन का रंग-ढंग ले लो।
यदि पड़े जरूरत ऐसे में, तो मेरा अंग-अंग ले लो॥
आखिर यह सबकुछ भारत की, माटी की ही तो माया है।
भीतर से सबकुछ एक मगर, बाहर से बदली काया है॥

इस प्रकार राणा सांगा, कुँभा, महाराणा प्रताप के गौरवशाली अतीत की कथाएँ लोकनायक के जीवन में आकर उन्हें त्याग, शौर्य और स्वतन्त्रता संग्राम के लिए प्रेरणा प्रदान करती हैं। भारत की अखण्डता का उद्‌बोध करता हुआ सतपुड़ा कहता है–

बूढ़ा सतपुड़ा लगा कहने, हूँ दूर मगर अलगाव नहीं।
कम हुआ आज तक उत्तर से, दक्षिण का कभी लगाव नहीं।।

लोकनायक पं० जवाहरलाल के सार्वभौमिक व्यक्तित्व के निर्माण में दक्षिण भारत के जगद् गुरु शंकराचार्य, रामानुज आदि का व्यापक प्रभाव रहा। भवभूति, कालिदास की सर्जनात्मक भावुकता ने नायक के व्यक्तित्व में साहित्य, कला और संस्कृति की त्रिवेणी प्रवाहित की। 'अप्पर' द्वारा 'सत्याग्रह' का मन्त्र मिला।

फिर बंगाल के कृतिदास कृत 'रामायण', कवि कंकड़, चण्डीदास, दौलत काजी, विवेकानन्द, दीनबन्धु के साथ ही बंकिम बाबू के 'वन्देमातरम्' की छाप भारत के मानस पटल पर अंकित हुई। टैगोर और शरत बाबू की अमर कला, शाहजफर की गजलें हृदय में स्पन्दन करनेवाली हैं। नेताजी के घायल सपने विकल हैं। इन सबको संजोकर वह कथानक को समर्पित करने के लिए प्रस्तुत होती है। असम पूरी क्षमता के साथ नायक पर न्योछावर होता है। वह कहता है–

मेरी हर धड़कन प्यासी है, तेरे चरणों के चुम्बन को।
खेती तैयार खड़ी है, रे जन-मन के स्नेह समर्पण को।।

तदनन्तर विहार भगवान बुद्ध के उपदेश, गोपा के आँसू, राहुल की तुतली बोली, तीर्थंकर महावीर के उपदेश, पाटलिपुत्र का गौरवमय इतिहास, मगध की ममता, बिम्बसार की आत्मकथा, समुद्रगुप्त का यश, चन्द्रगुप्त का शौर्य, कौटिल्य के सपने, अशोक की सत्य और अहिंसा, पुष्यमित्र की वैदिक संस्कृतियों का गिरजा, पतंजलि का चिन्तन, नालन्दा का विज्ञान और कला के तत्त्व, विद्यापति की भावुकता लेकर आनन्द भवन में कथानक संगम के राजा पं० नेहरू पर न्योछावर करता है।

उत्तर प्रदेश नायक को अपनी गोद में पाकर अपने को धन्य मानने लगा है। तीर्थराज प्रयाग के संगम पर करोड़ों की भीड़ इकट्‌ठा हो गयी। मथुरा, वृन्दावन और अवधपुरी की गलियों में चर्चा होने लगी कि द्वापर और त्रेता के शक्तिशाली कृष्ण और राम अब नये रूप में अवतरित हो गये हैं। तुलसी के रामचरितमानस का सपना साकार हो गया है। सूर के गीतों के फूल बरसने लगे हैं। सारनाथ के सपने जाग उठे हैं। मगहर से कबीर ने उपदेश दिया–

हिन्दू मुस्लिम, मन्दिर-मस्जिद, काबा-काशी का क्या झगड़ा?
भूल से मोल न तू लेना, मजहब का यह रगड़ा-झगड़ा।

गंगा तट पर बैठे बिठूर के नाना से हाँ भरता हुआ बोला कि अब भारत की आजादी का शीघ्र ही हल निकलने वाला है और 1857 ई० के बलिदान का शीघ्र ही फल मिलेगा। बूढ़ी झाँसी की रानी की आँखों के सपने टपक पड़े। रोती कलपती, झाँसी की रानी सत्तावन की कुर्बानी के रूप में 'राखी' लेकर प्रस्तुत हुई। विद्रोह की आग फैलानेवाले तात्याँ टोपे 'मेरठ की चिंगारी' लेकर स्वागत में पहुँच गया।

संकोची पंजाब 'आजाद की दुल्हन' के डोले को कन्धे पर लेने के लिए उत्साह में पहुँच गया और कहने लगा कि जहाँ लाला लाजपतराय, सरदार भगतसिंह जैसे बहादुर हैं वहाँ लज्जा लुटने का कोई प्रश्न नहीं है। जिस पंजाब पर पोरस की बिजली टूटी थी, सिकन्दर की तलवार जहाँ घबराकर लौट गयी थी, जहाँ पर सेल्यूकस की किस्मत फूटी थी, जहाँ पर कौटिल्य शास्त्र का महामन्त्र सर्वप्रथम उद्‌घोषित हुआ था, जहाँ पर हड़प्पा और मोहड़जोदड़ो के खण्डहर विश्व की प्रथम सभ्यता का नेतृत्व करते हैं। वह गुरुनानक और अर्जुनदेव के आशीर्वादों तथा अपने विभाजन की करुण कहानी को लेकर कथानक के समक्ष श्रद्धावनत होता है।

अपने अतीत की भूलों का बोझ लादे हुए कश्मीर प्रायश्चित करने के लिए प्रस्तुत होता है। अपने निश्चय का उद्‌घोष करता हुआ बोल उठता है–

गैरों की मरजी से बदले, ऐसी मेरी तकदीर नहीं।
भारत से विलग कभी होगा कश्मीर नहीं, कश्मीर नहीं।।

'कुरुक्षेत्र' करवट लेकर अत्याचारी दुर्योधन के पैशाचिक उत्पातों का अन्त करने के लिए कथानक को अर्जुन रूप से सम्बोधित करते हुए बोला कि तुम पर चर्खा रूपी चक्र सुदर्शनधारी मोहन (गांधीजी) की कृपा है, तुम गीता के कर्मयोगी मानवता की दिव्य ज्योति और जीवन दर्शन के लिए आओ तुम्हारा स्वागत है।

घायल दिल्ली बर्बादी से दबी है, लाल किला अपराधी की भाँति खामोश खड़ा है, अपने-अपने अतीत की दर्दभरी कहानी को याद करता हुआ वह अपनी ऐश्वर्य-हीनता की विवशता का दिग्दर्शन करते हुए बोल उठता है–

कैसे दे दूँ मेरे मालिक! हिंसा की घृणित कहानी को।
लूटा है जाने कितनों ने, भोली दिल्ली की रानी को॥

लाल किला यमुना को अपनी क्रान्तिकारी चिनगारियों को देखते हुए तुरन्त आनन्द भवन पहुँचने का अनुरोध करता है और यमुना कथानायक का अभिनन्दन करने के लिए संगम पर पहुँच जाती है। इस प्रकार सभी ने भेंट के रूप में अपनी संचित निधि को कथानायक के लिए न्योछावर कर दिया और सारा भारत पं० नेहरू में आत्मसात् होकर सम्पूर्ण भारत का प्रतीक बन गया।

जब लगा देखने मानचित्र, भारत न मिला तुझको पाया।
जब देखा तुझको नयनों में, भारत का चित्र उतर आया॥

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

1. 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य का कथानक संक्षेप में लिखिए। **(2017AA,AD,19AD,AF,AG,20MC,MG,ME,MF)**
2. 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य के आधार पर जवाहरलाल नेहरू का चरित्र-चित्रण कीजिए। **(2017AA,19AA,AB,AC)**
3. 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य के आधार पर तृतीय सर्ग का कथानक संक्षेप में लिखिए। **(2017AB,AD,AE,20MC)**
4. 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य के नायक का चरित्रांकन कीजिए। **(2020ME,MA,MF,20MD)**
5. 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य के द्वितीय सर्ग की कथावस्तु का उल्लेख कीजिए। **(2016CE,20MB,MA)**
6. 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य के आधार पर सम्राट अशोक का चरित्रांकन कीजिए। **(2020MB)**
7. 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य में व्यक्त राष्ट्रीय भावना पर प्रकाश डालिए। **(2020MG)**

●●

3 अग्रपूजा

(पं. रामबहोरी शुक्ल)

प्रयागराज, आजमगढ़, मथुरा जनपदों के लिए

सारांश

प्रथम सर्ग (पूर्वाभास)

दुर्योधन के द्वारा षड्यन्त्र करके लाक्षागृह में आग लगवा देने के बाद वह पूर्ण रूप से आश्वस्त हो गया कि अब पाण्डव समाप्त हो गये हैं तो उसने और अधिक अत्याचार बढ़ा दिये, किन्तु श्रीकृष्ण की बुद्धिमता एवं सावधानी से पाण्डव लाक्षागृह से जीवित निकलकर छद्मवेश में द्रौपदी के स्वयंवर में राजा द्रुपद के यहाँ उपस्थित हुए। राजा द्रुपद की शर्त के अनुसार अर्जुन ने मछली की आँख का लक्ष्यवेध किया। निराश हुए अन्य राजाओं ने अर्जुन पर घातक प्रहार किया, किन्तु भीम और अर्जुन ने उन्हें परास्त कर दिया। स्वयंवर में आये हुए श्रीकृष्ण और बलराम ने उन्हें पहचान लिया तथा उनके विश्राम-गृह में रात्रि के समय मुलाकात की। राजा द्रुपद ने द्रौपदी को अर्जुन को सौंप दिया। पाण्डव द्रौपदी के साथ माता कुन्ती के पास पहुँचे। कुन्ती की इच्छा के अनुसार द्रौपदी का विवाह पाँचों पाण्डवों के साथ कर दिया गया। इस अवसर पर उन्हें श्रीकृष्ण द्वारा उपहार तथा राजा द्रुपद द्वारा बहुत दहेज दिया गया। पाण्डवों को जीवित देखकर तथा द्रौपदी द्वारा उनका विवाह करने की घटना से दुर्योधन अधिक चिन्तित हो उठा। हस्तिनापुर से कर्ण को साथ लेकर उसने धृतराष्ट्र से पाण्डवों का सर्वनाश करने का परामर्श भी किया। धृतराष्ट्र ने भीष्म पितामह, द्रोण तथा विदुर के परामर्श पर पाण्डवों को आधा राज्य देने का निश्चय किया। पाण्डवों को बुलाने के लिए विदुर को भेजा गया। पाण्डवों के साथ कुन्ती, द्रौपदी तथा श्रीकृष्ण भी हस्तिनापुर आये। हस्तिनापुर की जनता ने उन सभी का बड़ा आदर एवं स्वागत किया। दूसरे दिन धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर का राज्याभिषेक कर दिया। उसके बाद में गुरुजनों से विदा लेकर पाण्डव द्रौपदी सहित खाण्डव वन को चले गये।

द्वितीय सर्ग (समारम्भ)

पाण्डव श्रीकृष्ण को साथ लेकर खाण्डव वन पहुँचे, यह एक विशाल वन था। यहाँ पर श्रीकृष्ण ने स्वर्ग लोक जैसा इन्द्रप्रस्थ तैयार करा दिया। जो व्यक्ति पाण्डवों के साथ हस्तिनापुर से आये थे वे सभी वहाँ सुखपूर्वक रहने लगे। कुछ दिनों के पश्चात् श्रीकृष्ण पाण्डवों से आज्ञा लेकर द्वारिकापुरी वापस चले आये। श्रीकृष्ण के वापस आते समय पाण्डव व्याकुल होने लगे। धर्मराज युधिष्ठिर के राज्य में प्रजा बहुत सुखी थी। वहाँ गुरुकुल में निवास करते हुए शिष्य लोग बड़ा शिष्ट व्यवहार करते थे। सब व्यक्ति अपने से बड़ों का बड़ा आदर करते थे तथा अपने से छोटों को परम स्नेह करते थे। वहाँ पर किसी भी प्रकार की उद्दण्डता के दर्शन नहीं होते थे। युधिष्ठिर के राज्य की कीर्ति सर्वत्र फैली हुई थी।

तृतीय सर्ग (आयोजन)

पाण्डवों का द्रौपदी से विवाह होने के उपरान्त पाण्डवों के आपसी मतभेद को दूर करने के लिए नारद जी ने यह प्रस्ताव रखा कि द्रौपदी एक-एक वर्ष प्रत्येक पति के साथ रहें। शर्त यह भी थी कि एक वर्ष तक एक पति के साथ रहते हुए यदि दूसरा पति द्रौपदी को देख ले तो उस पति को बारह वर्ष तक वन में रहना पड़ेगा। एक दिन एक चोर ब्राह्मणों की गायों को लेकर चल दिया। ब्राह्मणों ने राजा के द्वार पर जाकर सहायता की प्रार्थना की। अर्जुन शस्त्रागार से शस्त्र लेने के लिए गये। शस्त्रागार में द्रौपदी और युधिष्ठिर को बैठा हुआ देखकर अर्जुन नारद-नियम के अनुसार वनवास के लिए चल दिये। वनवास की अवधि में अनेक स्थानों पर घूमते हुए अर्जुन द्वारिकापुरी पहुँचे। वहाँ पर श्रीकृष्ण की बहन सुभद्रा से विवाह करके इन्द्रप्रस्थ वापस आ गये। श्रीकृष्ण सुभद्रा के लिए बहुत-सा दहेज लेकर इन्द्रप्रस्थ आ गये और बहुत समय तक वहाँ रहे। वहाँ पर अर्जुन और श्रीकृष्ण ने अग्नि-देव की तृप्ति के लिए खाण्डवदाह किया। अग्निदेव ने प्रसन्न होकर अर्जुन को चार श्वेत घोड़े तथा द्रुतगामी कपिध्वज नाम का रथ प्रदान किया। वरुणदेव ने अर्जुन को गाण्डीव धनुष और दो अक्षय तूणीर दिये। अग्नि ने श्रीकृष्ण को कौमुद्री गदा और सुदर्शन चक्र उपहार में दिया। मयदानव ने अग्नि की लपटों से व्याकुल होकर जीवन रक्षा की माँग की। अर्जुन ने उसे अभयदान देकर बचा लिया। मयदानव ने प्रसन्न होकर धर्मराज युधिष्ठिर के लिए अलौकिक सभा भवन तैयार किया। उसने अर्जुन को शंख तथा भीम को भारी गदा प्रदान की।

एक दिन प्रातःकाल पाण्डवों के पास नारद जी आये तथा युधिष्ठिर से पाण्डु का यह सन्देश कहा कि वह राजसूय यज्ञ करें जिससे कि मैं (पाण्डु) इन्द्रलोक में निवास कर सकूँ। युधिष्ठिर ने नारद जी द्वारा सन्देश भेजकर श्रीकृष्ण को बुला लिया तथा राजसूय यज्ञ करने के लिए परामर्श लिया। श्रीकृष्ण ने कहा कि आप सम्राट् हुए बिना राजसूय यज्ञ नहीं कर सकते। सम्राट् बनने के लिए आपको जरासन्ध का वध करना होगा। अतः सर्वप्रथम जरासन्ध का वध किया जाना चाहिए। जरासन्ध ने रुद्रयज्ञ में बलि देने के लिए दो हजार राजाओं को कैद कर रखा है। मैं उन राजाओं को छुड़ाने का आश्वासन देकर आया हूँ। युधिष्ठिर से आज्ञा लेकर भीम-अर्जुन को साथ लेकर श्रीकृष्ण जरासन्ध के पास पहुँचे। जरासन्ध ने भीम से मल्लयुद्ध करने का निश्चय किया। लगातार तेरह दिनों तक युद्ध होता रहा। भीम ने जरासन्ध को थका हुआ जानकर उसकी टांगें पकड़कर उठा लिया और जमीन पर पटक दिया। श्रीकृष्ण से संकेत प्राप्त करके भीम ने जरासन्ध की टांगें चीर कर विपरीत दिशा में फेंक दीं। जरासन्ध का क्रिया कर्म करके उसके पुत्र सहदेव का राज्याभिषेक किया। कैद से मुक्त हुए राजाओं तथा सहदेव ने युधिष्ठिर की अधीनता स्वीकार की। कुछ दिन तक वहाँ रहकर श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से विदा ली। इसके उपरान्त युधिष्ठिर ने अपने चारों भाई अर्जुन, भीम, नकुल तथा सहदेव को दिग्विजय के लिए भेजा। सम्पूर्ण भारत युधिष्ठिर की छत्रछाया में एक हो गया। युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ के लिए सभी राजाओं को आमन्त्रित किया। अर्जुन श्रीकृष्ण को इस यज्ञ में लाने के लिए द्वारिकापुरी गये।

चतुर्थ सर्ग (प्रस्थान)

बोले पार्थ अकेले में जा केशव हाथ तुम्हारे लाज।
भव सागर से पार उतारो पाण्डव कुल के तुम्हीं जहाज॥

द्वारिकापुरी में अर्जुन निमन्त्रण लेकर पहुँचे तो उन्होंने श्रीकृष्ण से एकान्त में कहा कि 'अब पाण्डव कुल की लाज आपके ही हाथ में है।' श्रीकृष्ण ने अर्जुन को विदाकर बलराम और उद्धव से कहा कि राजसूय यज्ञ में सभी राजा आमन्त्रित हैं, अतः कोई भी असाधारण घटना हो सकती है। अतः उन्हें सेना सहित चलना चाहिए। श्रीकृष्ण सेना साथ लेकर इन्द्रप्रस्थ जा पहुँचे। युधिष्ठिर ने सूचना पाकर उनका स्वागत किया। श्रीकृष्ण का सत्कार देखकर शिशुपाल और रुक्मी को ईर्ष्या होने लगी। वे दोनों ही स्वयं को पाण्डवों से श्रेष्ठ मानने लगे। श्रीकृष्ण ने रुक्मी की बहन रुक्मणी को अपनी पटरानी बना लिया था। रुक्मणी का विवाह शिशुपाल से होनेवाला था। अतः दोनों ही श्रीकृष्ण से ईर्ष्या रखते थे।

पंचम सर्ग (राजसूय यज्ञ)

राजसूय यज्ञ की सुव्यवस्था के लिए विभिन्न व्यक्तियों में कार्य विभाजन कर दिया गया। सब राजा आसनों पर बैठने लगे। श्रीकृष्ण

ने ब्राह्मणों के चरण धोये। सबसे पहले पूजन के लिए जब सहदेव ने श्रीकृष्ण का नाम पुकारा तथा श्रीकृष्ण सभासदों के बीच आये तो सभी राजा आसनों से उठकर खड़े हो गये केवल शिशुपाल ही बैठा रहा। अग्रपूजा के लिए श्रीकृष्ण को ही सबसे श्रेष्ठ बताया गया था। भीम ने सहदेव को आज्ञा दी कि सबसे पहले श्रीकृष्ण को और फिर अन्य पूज्य राजाओं को अर्घ्य दो। सभी राजाओं ने इसका समर्थन किया, किन्तु शिशुपाल ने इसका विरोध किया। शिशुपाल ने इस प्रकार जब श्रीकृष्ण की निन्दा की तो भीम उठकर खड़े हो गये। श्रीकृष्ण की प्रशंसा और अग्रपूजा के लिए नाम प्रस्तावित किये जाने की बात शिशुपाल सहन नहीं कर सका और श्रीकृष्ण पर प्रहार करने के लिए दौड़ पड़ा, किन्तु श्रीकृष्ण प्रसन्न मुद्रा में बैठे रहे। वह जिधर भी प्रहार करने के लिए दौड़ता उसी दिशा में श्रीकृष्ण का हँसता हुआ मुख दिखाई देता। अन्ततः शिशुपाल हाँफ गया। श्रीकृष्ण ने शान्त भाव से कहा कि–तू मेरा फुफेरा भाई है, अतः अब तक के सारे दुर्व्यवहार को मैंने माफ कर दिया। अब ऐसा न हो कि तुझे दण्ड देना पड़ जाये। शिशुपाल फिर भी श्रीकृष्ण की निन्दा करता रहा। तब श्रीकृष्ण ने अपने सुदर्शन चक्र से शिशुपाल के सिर को काट दिया। धर्मराज युधिष्ठिर ने आदरपूर्वक उसका अन्तिम संस्कार किया तथा उसके पुत्र का राज्याभिषेक किया।

षष्ठ सर्ग (उपसंहार)

शिशुपाल की मृत्यु के बाद भी राजसूय-यज्ञ विधिवत् रूप से चलता रहा। व्यास तथा धौम्य आदि सोलह ऋषियों ने बड़े ही विधि विधान से यज्ञ सम्पन्न कराया। युधिष्ठिर ने दान-दक्षिणा देकर सभी ऋषियों का सत्कार किया और सभी राजाओं को आदर-सत्कार के साथ सन्तुष्ट किया। उन्होंने बलराम तथा श्रीकृष्ण को धन्यवाद दिया। व्यास आदि ऋषियों ने युधिष्ठिर को अपना आशीर्वाद प्रदान किया। इस प्रकार से अग्रपूजा खण्डकाव्य की कथा पूर्ण होती है।

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

1. 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य के 'आयोजन' सर्ग की कथावस्तु प्रस्तुत कीजिए। **(2020MB,MG,ME,MF)**
2. 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य के नायक का चरित्रांकन कीजिए। **(2020MF)**
3. 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य के आधार पर श्रीकृष्ण का चरित्रांकन कीजिए। **(2017AA,AB,19AA,AB,AG,20MA)**
4. 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य के राजसूय यज्ञ सर्ग का सारांश संक्षेप में प्रस्तुत कीजिए। **(2020MA)**
5. 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य के 'सभारम्भ' सर्ग की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए। **(2020MC)**
6. 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य के नायक की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए। **(2020MC,MG,MB)**
7. 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य का कथानक संक्षेप में लिखिए। **(2016CC,CE,17AA,19AB,20MD)**
8. 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य के आधार पर युधिष्ठिर के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए। **(2019AC,20MD,ME)**

●●

4 मेवाड़-मुकुट

(गंगारत्न पाण्डेय)

बुलन्दशहर, देवरिया, बरेली, सुल्तानपुर, सीतापुर, बहराइच जनपदों के लिए निर्धारित।

सारांश

प्रथम सर्ग (अरावली)

राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी भाग में अरावली पर्वत शृंखला फैली हुई है। वह मेवाड़ की रक्षा का पूर्ण दायित्व स्वीकार करके बड़े ही गर्व से अपना मस्तक ऊँचा किये हुए खड़ा है। इस अरावली पर्वत की शृंखलाओं में कभी ऋषि-मुनि तपस्या करते थे और वहाँ पर उनके वेद-मन्त्रों के स्वर गूँजते थे। युद्ध में पराजित होने के बाद राणाप्रताप इसी सुरक्षित स्थान में पहुँचे जिसमें वे अपनी पत्नी–लक्ष्मी और पुत्र तथा पुत्री को लेकर निवास करते हैं। वन में अनेक कष्टों को सहन करते हुए भी उन्होंने अपने स्वाभिमान की रक्षा की तथा शत्रु पक्ष की

कन्या को पुत्री के समान पाला। यह उनकी उदारता तथा शरणागत वत्सलता का प्रमाण है। सर्ग के अन्त में महाराणा प्रताप की पत्नी अपने पुत्र को गोद में लिए भविष्य की चिन्ता में डूबी हुई बैठी है।

द्वितीय सर्ग (लक्ष्मी)

अरावली पर्वत शृंखला पर महाराणा प्रताप की कुटिया, चाँदनी रात का प्रथम पहर है। सर्वत्र नीरवता छायी हुई है। पक्षीगण दिन भर की थकान के बाद अपने-अपने घोंसले में सोये हुए हैं। इस एकान्त तथा निर्जन स्थान पर अपनी कुटिया के समक्ष लक्ष्मी चिन्तामग्न मुद्रा में बैठी हुई है। अपने भूख से पीड़ित पुत्र को देखकर व्याकुल हो उठी है। राणा की सन्तान होते हुए भी भरपेट दूध भी नहीं नसीब है। रानी लक्ष्मी कहती हैं कि, ''कर्मयोग तो आदर्शमात्र है, कर्म भोग ही सच्चा दर्शन है। सज्जन सर्वदा मार्मिक वेदना को प्राप्त करते हैं, परन्तु कुमार्गी व्यक्ति जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं।'' महाराणा प्रताप शत्रु के सामने अपना मस्तक नहीं झुका सकते। इसी स्वाभिमान की रक्षा के लिए सभी प्रकार के दुःखों को सहन कर रहे हैं। लक्ष्मी सम्मान रक्षा हेतु स्वयं को तो कष्टों में डाल सकती है किन्तु अपने पुत्र तथा पुत्री का दुःख उससे देखा नहीं जाता। उसके मुख से अचानक इन शब्दों को सुनकर महाराणा प्रताप रानी के रोने का कारण पूछते हैं। रानी लक्ष्मी 'कुछ नहीं', 'कुछ भी तो नहीं' कहकर आँसू पोंछती हुई कुटिया के अन्दर चली जाती है। महाराणा प्रताप के अश्रु भी सहसा निकल आते हैं।

तृतीय सर्ग (प्रताप)

महाराणा प्रताप कुछ समय तक अपनी कुटिया के समक्ष खड़े हुए कुछ विचार करते रहते हैं। फिर वृक्षों की घनी छाया में आँखें बन्द किये हुए रानी लक्ष्मी के कष्टों के विषय में सोचते हैं। वे कहते हैं कि, कर्त्तव्य का पालन करने से ही यश की प्राप्ति होती है। मेवाड़ को मुक्त कराना ही उनका प्रमुख कर्त्तव्य है। इसके लिए वे अपने प्राणों की आहुति तक देने के लिए तैयार हैं। वे सोचते हैं मैं ही अपने कर्त्तव्य-पथ से विचलित क्यों होऊँ। मानसिंह जैसा वीर उसके इशारे पर नाच रहा है। अकबर की साम, दाम, दण्ड, भेद की नीति से मैं ही शेष बचा हूँ। पर आज मैं किस दशा को पहुँच गया हूँ?.....रे अकबर! आज राणा को तूने सारे राजपूतों से अलग करके भटका दिया है। मेरा बन्धु शक्तिसिंह भी विद्रोही अकबर से जाकर मिल गया है, किन्तु जब उसकी आत्मा उसे धिक्कारेगी तो अवश्य ही वह लौटकर वापस आयेगा।

महाराणा प्रताप चेतक की स्वामिभक्ति तथा शत्रु पक्ष की कन्या 'दौलत' के विषय में भी विचार करते हैं। वे सिसोदिया वंश की आन रखने का संकल्प लेते हैं, किन्तु साधनहीन हुए वह विचार करते हैं कि वह शत्रु पक्ष का सामना कैसे करें।

चतुर्थ सर्ग (दौलत)

दौलत चिन्तामग्न मुद्रा में लताओं से आच्छादित घनी छाया में बैठी हुई अपने विगत जीवन के विषय में विचार कर रही है और कहती है–''उस भोग-विलास भरे जीवन में कटुता ही थी प्रीति नहीं।'' उसे विगत जीवन अच्छा नहीं लगता। महाराणा प्रताप की सज्जनता के विषय में विचार करती हुई वह कहती है–''अकबर यह क्यों नहीं समझते कि ईश्वर ने सबको समान बनाया है।'' वह शक्तिसिंह और प्रताप में तुलना करती हुई कहती है–''ये सूर्य हैं, वह दीपक है'' दौलत महाराणा प्रताप के लिए कुछ करना चाहती है। विचारों में निमग्न दौलत को उसी समय किसी के पैरों की ध्वनि सुनायी पड़ती है। यहीं पर इस सर्ग का अन्त हो जाता है।

पंचम सर्ग (चिन्ता)

एकान्त स्थान में बैठी हुई दौलत राणा प्रताप के पदचाप सुनकर उठ खड़ी होती है। राणा प्रताप उसके एकान्त में बैठने और उदासी का कारण पूछते हैं। वह कहती है, ''मैं तो बहुत सुखी हूँ, बस एक ही डर है, मेरे कारण कहीं आपकी स्वाधीनता का प्रण न टूट जाय। मैं आपकी कुछ सेवा तो नहीं कर सकी, उल्टे आपके दुःख ही मैंने बढ़ा दिये हैं।''

राणा कहते हैं, ''पगली! भला कौन-सा दुःख यहाँ मेरे लिए ले आयी है। तेरे आने से मुझे एक बेटी मिल गयी है।'' दौलत उत्तर देती है, ''रानी (लक्ष्मी) तो भीतर ही भीतर पीड़ा का विष पी रही हैं मैं उनसे कुछ पूछने में भी सहमती हूँ। आज आप मेरे साथ चलें, मैं उनका दुःख दूर करने का प्रयास करूँगी।''

दौलत तथा राणा प्रताप लक्ष्मी के पास जाते हैं। दौलत अपनी माता से उदासी का कारण पूछती है। लक्ष्मी पूरे परिवार को अभागा बताती है। राणा प्रताप बताते हैं आज उन्होंने मेवाड़ को मुक्त कराने का दृढ़ निश्चय किया है। इसके लिए वे सिन्धु देश से साधन प्राप्त करने की बात करते हैं और अकबर से युद्ध करने की बात बताते हैं। क्षत्राणी होने के कारण लक्ष्मी स्वाधीनता के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए तैयार हो जाती है। अगले दिन प्रताप प्रस्थान करने का निश्चय सुनाते हैं।

षष्ठ सर्ग (पृथ्वीराज)

राणा प्रताप प्रातःकाल प्रस्थान का प्रबन्ध करते हैं तभी एक अनुचर आकर उन्हें पत्र देता है। यह पत्र पृथ्वीराज द्वारा भेजा गया है।

पृथ्वीराज अकबर के मित्र हैं और कवि हैं, किन्तु राणा प्रताप से भेंट करते हैं और अकबर से युद्ध करने के लिए प्रेरित करते हैं। राणा प्रताप उन्हें अपनी साधनहीनता के विषय में बतलाते हैं, तो पृथ्वीराज भामाशाह का परिचय देते हैं और कहते हैं कि भामाशाह आपकी प्रत्येक प्रकार की सहायता करने को तैयार हैं। पृथ्वीराज उन्हें बुलाने के लिए राणा प्रताप की आज्ञा भी लेते हैं।

सप्तम सर्ग (भामाशाह)

राणा प्रताप भविष्य के जीवन के विषय में चिन्तन करते हैं। तभी हिरणों का समूह उनके सामने से होकर गुजरता है। इसके बाद मातृभूमि की जय-जयकार करते हुए भामाशाह वहाँ उपस्थित होते हैं। भामाशाह अपने पूर्वजों की संचित सम्पत्ति राणा प्रताप को सौंपने की इच्छा करते हैं, किन्तु राणा प्रताप उसे पराया धन मानकर अस्वीकार कर देते हैं। भामाशाह उन्हें यह समझाते हैं कि यह उनका अपना धन है। राणा प्रताप उन्हें अपने गले से लगा लेते हैं। फिर तो राणा प्रताप में नया उत्साह उत्पन्न हो जाता है। वह देश के हित में मर मिटने के लिए तैयार हो जाते हैं। यहीं पर खण्डकाव्य की कथा समाप्त हो जाती है।

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

1. 'मेवाड़-मुकुट' खण्डकाव्य के 'पृथ्वीराज' सर्ग का कथानक संक्षेप में लिखिए। **(2020MC,MB)**
2. 'मेवाड़-मुकुट' खण्डकाव्य के प्रमुख पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए। **(2020MF)**
3. 'मेवाड़-मुकुट' खण्डकाव्य के नायक महाराणा प्रताप का चरित्र-चित्रण कीजिए। **(2016CF,17AA,AB,19AB,20MC,MB,MF)**
4. 'मेवाड़-मुकुट' खण्डकाव्य के आधार पर भामाशाह का चरित्र–चित्रण कीजिए। **(2020MD)**
5. 'मेवाड़-मुकुट' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग की कथा का सारांश लिखिए। **(2016CD,17AF,AG,20MA,MF)**
6. 'मेवाड़-मुकुट' खण्डकाव्य की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए। **(2016CC,CE,CF,17AA)**

●●

5 जय सुभाष

(विनोदचन्द्र पाण्डेय 'विनोद')

लखनऊ, सहारनपुर, फैजाबाद, बाँदा, झाँसी, हरदोई जनपदों के लिए।

सारांश

प्रथम सर्ग

सुभाषचन्द्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 की पवित्र तिथि को कटक में हुआ था। इनके पिता श्री जानकी नाथ बोस वहाँ के एक प्रतिष्ठित नागरिक थे। उनकी माता प्रभावती अत्यन्त सदाचारी और उदार हृदय की स्त्री थीं। बचपन से ही सुभाष के जीवन पर माता-पिता तथा विद्यालय के एक शिक्षक बेनीमाधव का अत्यधिक प्रभाव पड़ा। साहस, निर्भीकता, बुद्धिमत्ता तथा तेजस्विता बालक सुभाष ने अपने माता-पिता और गुरुजी से सहज ही प्राप्त कर ली थी। उन्हें कहीं भी दीन-दुःखी लोग मिल जाते तो उनकी सेवा करने में उन्हें बड़ा सन्तोष होता। एक बार जाजपुर गाँव में भयंकर बीमारी फैलने पर सुभाष ने वहाँ जाकर गाँववालों की सेवा सुश्रूषा की तथा उनका कष्ट दूर करने के बाद ही वापस लौटे। मैट्रिक परीक्षा उन्होंने प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। स्वामी विवेकानन्द का सारगर्भित भाषण सुनकर मृत्यु ज्ञान की खोज में वह घर से निकल पड़े। काशी, मथुरा, वृन्दावन तथा हरिद्वार आदि स्थानों पर सच्चा साधुत्व प्राप्त न करके वह वापस लौट आये और फिर अध्ययन में जुट गये। प्रथम श्रेणी में इण्टर की परीक्षा पास करके वह प्रेसीडेंसी कॉलेज में प्रविष्ट हुए। वहाँ के एक प्रोफेसर जो अंग्रेज थे, भारतीयों से बहुत घृणा करते थे। एक बार भारतीयों के प्रति किये गये अपमान से आहत होकर सुभाष ने उनके गाल पर एक तमाचा जड़ दिया। परिणामस्वरूप वे स्कूल से निकाल दिये गये। एक अन्य विद्यालय से बी0ए0 करने के बाद वे इंग्लैण्ड गये और वहाँ कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से आई0सी0एस0 की परीक्षा उत्तीर्ण की, किन्तु उन्होंने भारत आकर अंग्रेजों की अधीनता में आई0सी0एस0 का पद स्वीकार नहीं किया। वे पूरी निष्ठा के साथ देश सेवा के कार्य में लग गये।

द्वितीय सर्ग

सुभाषचन्द्र बोस ने पूरी तरह स्वयं को देशसेवा के लिए समर्पित कर दिया। सन् 1921 के असहयोग आन्दोलन के माध्यम से वे महात्मा गांधी के सम्पर्क में आये और काँग्रेस में सम्मिलित हो गये। उसी समय बंगाल में देशबन्धु चितरंजनदास के नेतृत्व में स्वतन्त्रता संग्राम की ज्योति जलायी गयी। परिणामस्वरूप उन्हें अनेक बार जेल जाना पड़ा। वे कलकत्ता नगरमहापालिका के अधिशासी अधिकारी भी रहे और निर्धारित वेतन में से आधा वेतन लेकर पूरी निष्ठा और सेवा-भाव से उन्होंने अपना कार्य किया। जेल यात्राओं के दौरान अंग्रेजों ने उन्हें अलीपुर, बहरपुर तथा माण्डले की जेलों में रखा किन्तु सुभाष के हृदय में स्वतन्त्रता की जलती हुई चिनगारी बुझने के बजाय और अधिक वेग से जलने लगी। परिणामस्वरूप सरकार को झुकना पड़ा और अस्वस्थ सुभाष को अंग्रेजों ने जेल से रिहा कर दिया।

तृतीय सर्ग

1928 ई० में काँग्रेस के छियालीसवें अधिवेशन के अवसर पर स्वयंसेवक दल का नेतृत्व सुभाषचन्द्र बोस सम्भाल रहे थे। उनकी संगठन शक्ति को देखकर सब पर जादू-सा प्रभाव पड़ा। मंच से अध्यक्षीय भाषण देते समय पं० मोतीलाल नेहरू ने सुभाष की भूरि-भूरि प्रशंसा की और उन्हें देश के नवयुवकों का आदर्श कहकर पुकारा। स्वतन्त्रता सेनानियों के एक जुलूस का नेतृत्व करते हुए उन्हें पुलिस ने घायल कर दिया तथा जेल में डाल दिया। अलीपुर जेल से रिहा होने के बाद उन्होंने भारतीय जनमानस में पुनः स्वतन्त्रता की अलख जगायी। परिणामतः उन्हें पुनः सिवनी जेल में डाल दिया गया। अस्वस्थ हो जाने पर उन्हें जेल से छोड़ा गया। वे चिकित्सा हेतु यूरोप गये तो वहाँ भी उन्होंने भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन का प्रसार किया। उन्होंने 'द स्ट्रगल' नामक पुस्तक लिखी। भारत लौटने के बाद उन्हें फिर बन्दी बना लिया गया। फिर अस्वस्थता के कारण उन्हें रिहा किया गया तथा पुनः वह विदेश गये। लौटने पर उन्हें हरिपुरा काँग्रेस अधिवेशन का अध्यक्ष बनाया गया।

चतुर्थ सर्ग

ताप्ती नदी के किनारे पर स्थित विट्ठल नगर में काँग्रेस का 51वां अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन में 51 द्वार बनाये गये और 51 राष्ट्रीय ध्वज फहराये गये तथा 51 बैलों के सजे हुए रथ में सुभाषचन्द्र बोस बैठकर आये। सभा में सुभाष के ओजस्वी भाषण को सुनकर जनता में देशप्रेम की ज्वाला धधक उठी, नवयुवकों में नयी चेतना जाग्रत हो गयी। इसके बाद त्रिपुरा काँग्रेस अधिवेशन में अध्यक्ष पद के लिए चुनाव हुआ जिसमें सुभाषचन्द्र जीत गये तथा पट्टाभि सीतारमैया हार गये। गांधीजी पट्टाभि सीतारमैया को अध्यक्ष पद पर देखना चाहते थे। गांधीजी के द्वारा रोष प्रकट किये जाने पर सुभाष ने तुरन्त पद-त्याग कर दिया तथा 'फारवर्ड ब्लाक' नामक दल गठित किया। अपने ओजस्वी भाषणों से उन्होंने जनता को उत्साहित किया। कलकत्ता में ब्लैक होल नामक स्मारक, जिसमें अनेक अंग्रेजों को जिन्दा दफन कर दिया गया था उसको हटवाने के लिए नेताजी ने बहुत प्रयास किया। किन्तु सरकार द्वारा उन्हें फिर जेल भेज दिया गया। जेल से छूटने के बाद उन्हें अपने घर में ही नजरबन्द रखा गया। इस प्रकार सुभाषचन्द्र बोस मातृभूमि की मुक्ति हेतु निरन्तर अंग्रेज सरकार की यातनाओं को सहन करते रहे।

पंचम सर्ग

नजरबन्दी के बाद सुभाष के घर पर शासन का कड़ा पहरा रहने लगा। वह देश के लिए विशेष रूप से चिन्तित रहने लगे। अतः उन्होंने वहाँ से भागने की योजना बनायी और वह जाड़ों की आधी रात को मुल्ला का

वेश बनाकर विदेश चले गये। काबुल जाकर उत्तमचन्द्र से मित्रता हुई, जिसने उन्हें बाहर निकलने में सहायता की थी। इसके बाद उन्होंने जापान जाकर 'आजाद हिन्द फौज' का नेतृत्व किया जिसमें अनेक भारतीय युवकों ने भाग लिया। फिर वह सिंगापुर गये जहाँ रासबिहारी बोस ने उनका बहुत सम्मान किया। यहाँ पर सुभाष ने नेहरू, गाँधी, आजाद और बोस नामक चार ब्रिगेड बनाये, जिसमें सभी जातियों के सेनानी परस्पर प्रेमपूर्वक कार्य करते थे। वे सभी सैनिक ब्रिटिश राज्य को पराजित करने के लिए अति उत्साहित थे।

षष्ठ सर्ग

सिंगापुर में सैनिकों को सम्बोधित करते हुए सुभाष ने भारतीयों का आह्वान किया और नारा दिया, ''तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा''।

सुभाष द्वारा प्रेरित किये जाने पर उनकी सेना अंग्रेजों की सेना से भिड़ी और उसे पराजित करने लगी। 'भारत माता की जय', 'नेताजी की जय' का उद्घोष करते हुए आजाद हिन्द फौज निरन्तर आगे बढ़ती जा रही थी। 18 मार्च, 1944 ई० को यह सेना अंग्रेजों को पराजित करती हुई कोहिमा पहुँची। आजाद हिन्द फौज ने 'मोराई टिड्डिम' पर अधिकार कर लिया। अराकान पर भी तिरंगा झंडा फहरा दिया गया। इस प्रकार से विजय प्राप्त करते हुए उन्होंने 1945 ई० में नव वर्ष को पूर्ण उत्साह के साथ मनाया।

सप्तम सर्ग

बर्मा पर पुनः दुश्मन ने अधिकार कर लिया। आजाद हिन्द फौज को भी पराजय का मुख देखना पड़ा। अगस्त 1945 ई० में अमेरिका ने हिरोशिमा तथा नागासाकी पर परमाणु बम गिराये, जिस कारण बहुत से नर-नारी मृत्यु को प्राप्त हुए तथा कुछ विकलांग हो गये। जापान ने जनहित को देखते हुए हथियार डाल दिये। आजाद हिन्द फौज के सैनिक व्याकुल होने लगे। यह देखकर सुभाष भी परेशान हो गये। जनहित में उन्होंने भी आत्म-समर्पण का निश्चय कर लिया तथा सैनिकों को पुनः उचित समय पर लड़ाई प्रारम्भ करने का आश्वासन दिया। सुभाष ने सैनिकों से विदा ली तथा जहाज द्वारा टोकियो के लिए प्रस्थान किया। उन्हें जापान के प्रधानमंत्री 'हिरोहितो' से भी मिलना था। रास्ते में ही दुर्भाग्यवश 18 अगस्त को उनका जहाज **ताइहोक** में दुर्घटनाग्रस्त हो गया। जापानी रेडियो द्वारा यह दुःखद समाचार प्रसारित किया गया कि नेताजी सुभाषचन्द्र बोस अब नहीं रहे। अचानक प्रसारित इस समाचार पर भारतीय स्तब्ध रह गये। यद्यपि आज हमारे बीच नेता जी नहीं हैं किन्तु उनकी अमरवाणी भारतवासियों को अनन्त काल तक प्रेरणा प्रदान करती रहेगी। भारतवासी युगों-युगों तक उनके शौर्य, पराक्रम और देशभक्ति के गीत गाते रहेंगे।

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

1. 'जय सुभाष' खण्डकाव्य की किसी प्रमुख घटना की कथा संक्षेप में लिखिए। **(2020MA)**
2. 'जय सुभाष' खण्डकाव्य के आधार पर उसके नायक का चरित्र-चित्रण कीजिए। **(2016CB,CC,17AA,AC,AD,AG, 19AA,AD,AE,AG)**
3. 'जय सुभाष' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग की कथा संक्षेप में लिखिए। **(2016CE,19AA,20MD,MA,MF,MB)**
4. 'जय सुभाष' खण्डकाव्य के आधार पर सुभाष का चरित्रांकन कीजिए। **(20ME)**
5. 'जय सुभाष' खण्डकाव्य के प्रथम सर्ग की कथा संक्षेप में लिखिए। **(2018HF,20MC,MG,ME)**
6. 'जय सुभाष' खण्डकाव्य के आधार पर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का चरित्र-चित्रण कीजिए। **(2020MC,MG,MF,MB)**
7. 'जय सुभाष' खण्डकाव्य की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए। **(2016CA,17AA,19AB,AG)**
8. 'जय सुभाष' खण्डकाव्य के चतुर्थ सर्ग की कथा अपने शब्दों में लिखिए। **(2020MD)**

●●

6 मातृभूमि के लिए

(डॉ० जयशंकर त्रिपाठी)

गोरखपुर, मुरादाबाद, शाहजहाँपुर, लखीमपुर खीरी, मैनपुरी, मुजफ्फरनगर जनपदों के लिए।

सारांश

डॉ० जयशंकर त्रिपाठी द्वारा लिखित प्रस्तुत खण्डकाव्य तीन सर्गों 1. संकल्प, 2. संघर्ष और 3. बलिदान में विभक्त है। इसकी कथा निम्न प्रकार है–

प्रथम सर्ग (संकल्प)

भारत की स्वतन्त्रता से पूर्व यहाँ ब्रिटिश हुकूमत थी। अंग्रेजों का साम्राज्य था। भारतीय लोगों पर अंग्रेज तरह-तरह के अत्याचार कर रहे थे। परिणाम यह हुआ कि अनेक भारतीय उत्साही वीरों ने स्वाधीनता का संघर्ष छेड़ दिया। गांधी जी ने सत्य, अहिंसा तथा स्वदेशी का सन्देश दिया। अंग्रेज सरकार देशभक्तों पर विभिन्न प्रकार के जुल्म कर रही थी। एक तरफ अंग्रेजों के द्वारा किये गये अत्याचार बढ़ रहे थे तो दूसरी तरफ वीर देशभक्तों के हृदय में स्वतन्त्रता की चिनगारी सुलग रही थी। उसी वातावरण में चन्द्रशेखर आजाद ने आकर बलिदान का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

चन्द्रशेखर आजाद का जन्म मध्य प्रदेश के भावरा नामक गाँव में हुआ था। बड़ा होकर वह ब्राह्मण बालक अध्ययन करने के लिए

काशी आया। वहाँ समाचार-पत्रों में अंग्रेजों के जुल्मों की कहानी पढ़कर उसका खून खौलने लगा, उसका चेहरा क्रोध से तमतमा उठा। रौलट एक्ट और उसके विरोध में जलियाँवाला बाग में सभा हुई। अंग्रेजों ने चारों ओर से घेरकर उस निहत्थी भीड़ पर गोली चलवा दी। जनरल डायर के आदेश पर इस हत्याकाण्ड का समाचार सुनकर चन्द्रशेखर की आँखें सजल हो उठीं, मुख क्रोध से लाल हो गया। उन्होंने अपने साथियों को देश-भक्ति की प्रेरणा दी और कहा–

सूत्रों का रटना छोड़ो तो अब स्वतन्त्रता का पाठ पढ़ो॥

इस घटना के बाद चन्द्रशेखर ने भारत माता की पराधीनता की बेड़ियों को तोड़ने का प्रण कर लिया।

1921 ई० में जब ब्रिटिश युवराज भारत आये तो महात्मा गांधी ने असहयोग का नारा दिया। देश के कोने-कोने से कर्मचारी अपने कार्यालय, विद्यार्थी अपने विद्यालय तथा मजदूर अपने कारखाने छोड़कर निकल पड़े। अंग्रेजों का दमन चक्र बढ़ गया। 15 वर्ष का बालक चन्द्रशेखर भी बन्दी बना लिया गया। जब उन्हें मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया और मजिस्ट्रेट ने नाम पूछा तो उत्तर मिला – आजाद। पिता का नाम पूछा तो चन्द्रशेखर ने कहा – स्वाधीन। निवास-स्थान पूछा गया तो उसने कहा – जेलखाना। चन्द्रशेखर को सोलह बेंतों का दण्ड दे दिया गया। बालक बेंतों की मार खाकर भी 'भारत माता की जय' बोलता रहा। एक छोटे-से बालक ने अंग्रेजों को चुनौती दे दी। काशी के लोगों ने उनकी देशभक्ति और वीरता से प्रभावित होकर चन्द्रशेखर का बड़ा मान-सम्मान किया तथा अपार स्नेह दिया। इस प्रकार चन्द्रशेखर का नाम बिजली की चिनगारी की तरह सम्पूर्ण भारत में फैल गया।

द्वितीय सर्ग (संघर्ष)

चन्द्रशेखर सभी प्रकार के बन्धनों से मुक्त होकर एक ही बन्धन में बँध गये थे और वह था राष्ट्रभक्ति का बन्धन। आजाद के अद्‌भुत शौर्य को देखकर देशवासी तो क्या प्रकृति भी उन पर मोहित हो गयी थी। देश को आजाद कराने के लिए उन्होंने अपने साथियों और नवयुवकों के हृदय में राष्ट्रीय चेतना की अग्नि भड़का दी। जब असहयोग आन्दोलन का प्रभाव कम पड़ने लगा, तो उन्होंने सशस्त्र क्रान्ति का प्रश्रय लिया तथा इसके लिए उन्होंने बम तथा पिस्तौल का निर्माण करवाया। जब इन चीजों के लिए उन्हें धन की आवश्यकता पड़ी तो उन्होंने सरकारी खजाने को लुटवाया तथा एक मठाधीश का शिष्यत्व भी स्वीकार किया। आजादी के लिए उन्हें ड्राइवरों की आवश्यकता हुई तो उन्होंने मोटर ड्राइवरी भी सीखी। चन्द्रशेखर ने काकोरी में सरकारी खजाना लूटा। इस काण्ड में पकड़े जाने पर बिस्मिल तथा अशफाक उल्ला खाँ को फाँसी दे दी गयी तथा बख्शी को आजीवन कारावास का दण्ड दिया गया। कोशिश करने पर भी चन्द्रशेखर और भगतसिंह को सरकार गिरफ्तार न कर सकी।

1928 ई० में 'साइमन कमीशन' भारत के झगड़ों की जाँच के लिए आया। राष्ट्रीय स्वयंसेवकों ने इसका बड़ी सख्ती से विरोध किया। परिणामतः उन्हें सरकार की लाठियों का प्रहार झेलना पड़ा जिससे क्रोधित होकर सारे भारत में जनता ने साइमन कमीशन का विरोध किया। लखनऊ में अंग्रेजों ने जवाहरलाल नेहरू पर लाठियाँ बरसायीं और वह घायल हो गये। लाहौर में भी साइमन कमीशन का पूरी सख्ती से विरोध हुआ और वहाँ के आकाश में 'साइमन कमीशन वापस जाओ' के नारे गूँजने लगे। पंजाब केसरी लाला लाजपतराय काले झण्डों के साथ नारे लगा रहे थे, उन पर पुलिस अफसर स्काट ने निर्ममतापूर्वक प्रहार किया जिससे घायल अवस्था में ही उनका कुछ दिनों के बाद देहावसान हो गया। उनकी मृत्यु का समाचार सुनकर सारे देश में शोक व्याप्त हो गया। इस समय पूर्वी भारत में चन्द्रशेखर आजाद क्रान्ति की ज्वाला धधका रहे थे उधर पश्चिमी भारत में सरदार भगतसिंह।

चन्द्रशेखर आजाद ने दिल्ली के फिरोजशाह मेले में क्रान्तिकारियों का सम्मेलन किया जिसमें सुखदेव, बटुकेश्वर दत्त, यतीन्द्रनाथ दत्त, सरदार भगतसिंह आदि सभी देशभक्त उपस्थित हुए। सबके सहयोग से चन्द्रशेखर आजाद ने 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' का गठन किया। आजाद इस सेना के कमाण्डर-इन-चीफ थे। लाहौर में चन्द्रशेखर ने भगतसिंह और राजगुरु से मिलकर लाला लाजपतराय के हत्यारे पुलिस अफसर स्काट की हत्या करने की योजना बनायी। स्काट के स्थान पर सैण्डर्स मारा गया। इससे अंग्रेज भयभीत हो गये और उन्होंने असेम्बली में 'जनता रक्षा बिल' प्रस्तुत किया, जिसे अध्यक्ष विट्ठल भाई पटेल ने पास नहीं होने दिया। 8 अप्रैल को सरदार भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने असेम्बली में बम फेंका जिससे अंग्रेज भयभीत हो गये। दोनों राष्ट्रभक्त अंग्रेज सरकार द्वारा बन्दी बना लिए गये। उन्हें पहले आजीवन कारावास फिर बाद में प्राणदण्ड दिया गया। आजादी का सारा भार अब प्रखर चन्द्रशेखर के सिर पर आ गया।

तृतीय सर्ग (बलिदान)

चन्द्रशेखर आजाद उन दिनों मध्य प्रदेश की सातार नदी के किनारे हनुमान मन्दिर की कोठरी में विश्राम किया करते थे। वहाँ की प्रकृति बड़ी ही सुहावनी थी। चारों ओर पलाश के लाल-लाल फूल फैले हुए थे। एक रात को मास्टर रुद्रप्रयाग और चन्द्रशेखर भारत माता को पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त कराने के लिए भविष्य की योजना बना रहे थे। रुद्रप्रयाग से आजाद ने कहा कि– तुम कुछ दिनों तक चुपचाप रहकर संगठन शक्ति को मजबूत करो, मैं नहीं चाहता कि कहीं हड़बड़ी और जल्दबाजी में तुम्हारे प्राण संकट में पड़ जायँ।

चन्द्रशेखर ने पलाश के फूलों पर एक दृष्टि डाली और भावुक होकर कहा– यह धरती जो पलाश के लाल-लाल फूलों की चूनर ओढ़े हैं उसमें मुझे बिस्मिल, अशफाक, रोशन, खुदीराम बोस और यतीन्द्रनाथ का रक्त बहता हुआ दिखाई दे रहा है। भगतसिंह और राजगुरु को मृत्यु-दण्ड मिला है। अंग्रेजों ने भारत माता के पुत्रों के खून से ही उसका आँचल रंग दिया है। इस कृत्य के लिए मैं अंग्रेजों को छोड़ नहीं सकता। इसके लिए मैं प्रतीक्षा नहीं कर सकता। आर्मी के संगठन को मजबूत करके क्रान्ति का बिगुल बजाते हुए मुझे अपना दायित्व पूरा करना ही होगा।

एक दिन आजाद फूलबाग की सभा में सशस्त्र क्रान्ति के विरुद्ध भाषण सुन रहे थे, वहीं पर खड़े गणेशशंकर विद्यार्थी ने उनके उत्तेजित मन को शान्त किया और कहा– "देख आजाद! नेता की अनजानी बातों को मत-सुनना।" उन्हें इस बात का डर था कि कहीं आजाद सभा को भंग न कर दें। उनका यह विचार भ्रम ही था। आजाद ने कहा कि मैं प्रयाग में जवाहरलाल नेहरू से मिलना चाहता हूँ, कानपुर में पार्टी के संगठन की क्या स्थिति है देखना चाहता हूँ तथा प्रयाग में संकट को दूर करने का उपाय सोचूँगा।

प्रयाग के उत्तरी भाग में वृक्षों के नीचे आजाद अपने मित्रों से बात कर ही रहे थे कि अल्फ्रेड पार्क के पास आकर पुलिस की गाड़ी रुकी। आजाद ने तुरन्त अपने मित्रों को विदा किया तथा पिस्तौल में गोलियाँ भरीं तथा पुलिस से मोर्चा लिया। उन्होंने पिस्तौल की पहली गोली से एक देशी अफसर का जबड़ा तोड़ दिया। एस०पी० नॉटवाबर यह देखकर हैरान था। उसने वृक्ष की ओट ली। इस समय आजाद अकेले ही पुलिस का सामना कर रहे थे। लगातार एक घण्टे तक युद्ध चलता रहा। सारा वातावरण गोलियों की आवाज से गूँज गया। अन्त में जब पिस्तौल में एक गोली शेष रह गयी तो आजाद असमंजस में पड़ गये और उन्होंने सोचा कहीं पुलिस के हाथों पकड़ा न जाऊँ, किन्तु कुछ क्षणों के बाद देश के उस लाडले सपूत ने अपनी ही पिस्तौल की गोली अपनी ही कनपटी पर मार ली और सदैव के लिए भारत माता की गोद में सो गया। सम्पूर्ण भारत की जनता उनकी मृत्यु को सुनकर रुदन करने लगी। चारों ओर वीर बलिदानी आजाद की जय-जय के नारे लगने लगे। आजाद के शौर्य और साहस का स्मरण कर आज भी जनता के मन में राष्ट्र-प्रेम की भावना जागृत होने लगती है।

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

1. 'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य के 'संकल्प' सर्ग की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए। **(2020MC,ME,MF)**
2. 'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य के नायक (चन्द्रशेखर) का चरित्रांकन कीजिए। **(2017AF,19AA,20MC,MG,MF,ME)**
3. 'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य की कथावस्तु सारांश संक्षेप में लिखिए। **(2016CF,17AA,AB,AD,19,AB,AG,20MA)**
4. 'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य के प्रमुख पात्र का चरित्र–चित्रण कीजिए। **(2020MB)**
5. 'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य के प्रमुख पात्र का चरित्रांकन कीजिए। **(2020MA)**
6. 'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य के 'संघर्ष' सर्ग की कथावस्तु पर प्रकाश डालिए। **(2020MB)**
7. 'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य की प्रमुख घटनाओं का उल्लेख कीजिए। **(2020MD)**
8. 'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग (बलिदान सर्ग) की कथा अपने शब्दों में लिखिए। **(2020MD)**

●●

7 कर्ण

(केदारनाथ मिश्र 'प्रभात')

अलीगढ़, जौनपुर, बलिया, हमीरपुर, एटा जनपदों के लिए ।

सारांश

प्रथम सर्ग (रंगशाला में कर्ण)

कुन्ती को सूर्य के वरदान से कौमार्यावस्था में ही एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। लोकलाज के भय तथा कुल की मर्यादा के कारण कुन्ती ने उस पुत्र को नदी में बहा दिया। अधिरथ नाम के एक सूत ने उस पुत्र को नदी से निकाला और घर ले गया। अधिरथ की पत्नी

राधा ने बड़े प्रेमपूर्वक उसका पालन-पोषण किया। राधा द्वारा पालन-पोषण किये जाने के कारण उसका नाम राधेय पड़ा। कुछ बड़ा होने पर एक दिन वह बालक राजभवन की रंगशाला में आ गया, परन्तु पाण्डवों ने उसकी वीरता पर व्यंग्य किया। दुर्योधन ने इसके विपरीत उसे बड़ा सम्मान दिया और कहा कि जो तुम्हें सूत-पुत्र कहेगा मैं उसको नीचा अवश्य दिखाऊँगा। दुर्योधन के द्वारा इस प्रकार कहने से उसे बड़ी सान्त्वना मिली और दुर्योधन का परम मित्र बन गया। पाण्डवों के सामने कर्ण को और भी कई स्थानों पर नीचा देखना पड़ा। द्रौपदी के स्वयंवर में जब वह लक्ष्यभेद करने को उठा तो द्रौपदी ने भी उसे अपमानित करते हुए इस प्रकार कहा–

सूत पुत्र के साथ न मेरा गठबन्धन हो सकता।
क्षत्राणी का प्रेम न अपने गौरव को खो सकता॥

द्वितीय सर्ग (द्यूत सभा में द्रौपदी)

महाराज द्रुपद ने अपनी पुत्री द्रौपदी का स्वयंवर करने के लिए देश भर के राजाओं को आमन्त्रित किया। उस स्वयंवर में ब्राह्मण वेशधारी अर्जुन ने लक्ष्य को वेध किया और द्रौपदी का वरण किया। द्रौपदी पाँचों पाण्डवों की वधू बन कर आ गयी। विदुर के समझाने पर युधिष्ठिर को हस्तिनापुर में आधा राज्य भी प्राप्त हो गया। कुछ समय के बाद पाण्डवों ने राजसूय-यज्ञ किया। पाण्डवों का वैभव देखने के लिए दुर्योधन भी वहाँ आया। राजभवन में भ्रमवश जहाँ जल भरा हुआ था, दुर्योधन ने उसे स्थलभाग समझा और वह जल में गिर गया। द्रौपदी उसे देखकर हँस पड़ी और कहा कि– अन्धों की सन्तान अन्धी ही होती है। दुर्योधन इस अपमान से इतना आहत हुआ कि उसने मन-ही-मन द्रौपदी से इस अपमान का बदला लेने का प्रण कर लिया। अपने मामा शकुनि से मिलकर दुर्योधन ने पाण्डवों के साथ कपट द्यूत क्रीड़ा की योजना बनायी। इस कपट क्रीड़ा में मामा शकुनि की चाल से दुर्योधन ने युधिष्ठिर को हरा दिया। अन्त में युधिष्ठिर ने द्रौपदी को भी दांव पर लगा दिया। दुर्भाग्य से वे द्रौपदी को भी हार बैठे। दुर्योधन की आज्ञा से दुःशासन द्रौपदी को बाल पकड़कर घसीटता हुआ राजसभा में ले आया। द्रौपदी ने बहुत प्रार्थना की किन्तु दुःशासन नहीं माना। कर्ण ने इस अवसर का लाभ उठाते हुए दुःशासन को और अधिक प्रेरित किया–

दुःशासन मत ठहर, वस्त्र हर ले कृष्णा के सारे।
वह पुकार ले रो रोकर, चाहे वह जिसे पुकारे॥

कर्ण ने दुःशासन को इस कार्य के लिए उत्साहित तो किया किन्तु वह जीवनपर्यन्त अपने इस कृत्य पर पश्चाताप करता रहा। जब उसे यह मालूम हुआ कि कुन्ती उसकी माँ है और पाण्डव उसके भाई हैं तो उसे और अधिक पछतावा हुआ।

तृतीय सर्ग (कर्ण द्वारा कवच कुण्डल दान)

द्यूत क्रीड़ा में हारकर युधिष्ठिर अपने भाइयों के साथ वन-वन भटकने लगे। उधर दुर्योधन ने यज्ञ किया और वह चक्रवर्ती सम्राट् बन गया। कर्ण ने प्रतिज्ञा की कि जब तक मैं अर्जुन को मार नहीं दूँगा, तब तक किसी से पैर नहीं धुलवाऊँगा और जो मुझसे कुछ माँगेगा मैं उसे वही दूँगा। कर्ण के इस प्रण से युधिष्ठिर अतिचिन्तित रहने लगे क्योंकि कर्ण के कुण्डल और कवच लिए बिना उसे परास्त नहीं किया जा सकता था। इन्द्र अर्जुन की सहायता करना चाहते थे क्योंकि अर्जुन इन्द्र का ही पुत्र था। इन्द्र ब्राह्मण का वेश धारण करके कर्ण के पास कुण्डल और कवच माँगने गये। कर्ण ने सूर्य के बताने पर इन्द्र को पहचान तो लिया किन्तु फिर भी प्रतिज्ञा के अनुसार कुण्डल और कवच इन्द्र को दे दिये।

चतुर्थ सर्ग (श्रीकृष्ण और कर्ण)

पाण्डवों को दुर्योधन ने राज्य में हिस्सा देने से मनाकर दिया। पाण्डवों के प्रति न्याय को दृष्टि में रखते हुए श्रीकृष्ण दुर्योधन की सभा में आये, किन्तु सभा में निराश होकर श्रीकृष्ण सभा से बाहर आये तथा कर्ण को अपने पास बुलाकर समझाया कि वह तो पाण्डवों का बड़ा भाई है। यह बात सुनकर कर्ण आश्चर्यचकित रह गया। श्रीकृष्ण के सामने कर्ण ने अपना दुःख प्रकट करते हुए कहा कि– न जाने कितने अवसरों पर लोगों ने मुझे सूत-पुत्र कहकर अपमानित किया किन्तु इसके बाद भी मेरी माता ने कभी भी मुझे अपना पुत्र स्वीकार नहीं किया। कवि ने कर्ण की मनोवेदना का वर्णन करते हुए कहा है–

यों न उपेक्षित होता मैं, यों भाग्य न मेरा सोता।
स्नेहमयी जननी ने यदि, रंचक भी चाहा होता॥
घृणा, अनादर तिरस्क्रिया, यह मेरी करुण कहानी।
देखो, सुनो कृष्ण! क्या कहता इन आँखों का पानी।

कर्ण ने श्रीकृष्ण से कहा कि मैं जानता हूँ कि जीत उसी तरफ होगी जिस तरफ तुम हो। फिर भी मैं दुर्योधन के द्वारा किये गये उपकार को नहीं भूल सकता। मैं उसी के पक्ष में लड़ूँगा। मैंने अपने कुण्डल-कवच भी दान में दे दिये हैं, पाण्डवों को इन्हीं का भय था।

इसके साथ ही द्रौपदी के प्रति कराये गये अत्याचार का स्मरण करके कर्ण बहुत दुःखी हुआ। श्रीकृष्ण ने उसे दुराग्रही बताया। किन्तु कर्ण दुर्योधन का साथ छोड़ने को तैयार न हुआ।

पंचम सर्ग (माँ-बेटा)

महाभारत का युद्ध होने तक अब केवल पाँच दिन शेष रह गये थे। कुन्ती इससे अत्यन्त व्याकुल होने लगीं उन्हें तो सबसे बड़ा दुःख यही था भाई-भाई ही एक-दूसरे के खून के प्यासे हो गये हैं और एक भाई ही दूसरे भाई की मृत्यु का कारण बनेगा। कुन्ती ने अच्छी तरह विचार किया और कर्ण के पास गयीं। कर्ण ने कुन्ती को प्रणाम किया और अपना परिचय राधेय के रूप में दिया। कुन्ती ने कहा कि तुम राधा के पुत्र नहीं हो बल्कि मेरे पुत्र हो। कुन्ती की यह बात सुनकर कर्ण की आँखें क्रोध से लाल हो गयीं। कर्ण ने कहा– 'जब मैं अपमानित किया जा रहा था और पाण्डव मुझे सूत-पुत्र कहकर व्यंग्य-बाण छोड़ते थे तब तुम्हारा पुत्र-प्रेम कहाँ चला गया था? आज तुम पाण्डवों के सिर पर मौत का साया देखकर मेरे सामने इस रहस्य को प्रकट करने आयी हो? कर्ण ने कुन्ती से कहा–

क्यों तुमने उस दिन न कहा, सबके सम्मुख ललकार।
कर्ण नहीं है सूत-पुत्र, वह भी है राजकुमार॥

कुन्ती की आँखों से अश्रुधारा बहने लगी। कर्ण ने कहा मेरे भाग्य के साथ बहुत खिलवाड़ हुई है, किन्तु यह भी बड़ी विडम्बना होगी कि – एक माँ अपने पुत्र के पास से खाली हाथ लौटे। मैंने केवल अर्जुन को ही मारने की प्रतिज्ञा की है। मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि मैं अन्य किसी पाण्डव को नहीं मारूँगा। कुन्ती वापस लौट आयी। इधर कर्ण के हृदय में भी विचारों का सागर लहराने लगा।

षष्ठ सर्ग (कर्ण-वध)

महाभारत का युद्ध अब प्रारम्भ हो गया। कौरवों की ओर से पितामह भीष्म सेनापति हुए। कर्ण को नीच और अभिमानी कहकर भीष्म ने उसका सहयोग लेने से इनकार कर दिया। दसवें दिन भीष्म युद्ध में घायल होकर शरशैय्या पर लेट गये, तो कर्ण उनके पास गये। पितामह ने कर्ण से पाण्डवों की रक्षा करने के लिए कहा। कर्ण ने कहा– मैंने अर्जुन को मारने की प्रतिज्ञा की है और मैं अपनी प्रतिज्ञा नहीं त्याग सकता। युद्ध के सोलहवें दिन कर्ण कौरवों का सेनापति बना। उसकी भयंकर बाण वर्षा से पाण्डव व्याकुल होने लगे तभी भीम का पुत्र घटोत्कच भयानक मायावी आकाश युद्ध करता हुआ कौरवों की सेना पर टूट पड़ा। कौरव सेना रक्षा के लिए कर्ण के पास गयी तो कर्ण ने अमोघ अस्त्र से घटोत्कच का वध कर दिया जिसे वह अर्जुन पर चलाना चाहते थे। वह सोचने लगे कि यह भी कृष्ण की ही माया है। अब अर्जुन की विजय निश्चित थी। दिन थोड़ा ही शेष था। कर्ण के रथ का पहिया जमीन में धँस गया। वह पहिये को निकालने लगा तभी कृष्ण का संकेत पाकर अर्जुन ने कर्ण का वध कर दिया।

सप्तम सर्ग (जलाञ्जलि)

कर्ण का वध होने के बाद कौरवों की सेना कमजोर हो गयी। वे युद्ध में मारे गये। युधिष्ठिर ने अपने ही कुल के भाइयों को जल-दान दिया। तभी कुन्ती ने कर्ण को भी जल-दान देने को कहा। युधिष्ठिर द्वारा पूछे जाने पर कुन्ती ने कर्ण के जन्म की सारी कहानी प्रकट कर दी। यह जानकर कि कर्ण उनके ही बड़े भाई थे युधिष्ठिर को बड़ा ही दुःख हुआ। उन्होंने बड़ी श्रद्धापूर्वक कर्ण को जल-दान दिया। उनके मन की वेदना कवि ने इस प्रकार व्यक्त की है–

मानव को मानव न मिल सका, धरती को धृति धीर।
भूलेगा इतिहास भला कैसे, यह गहरी पीर॥

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

1. 'कर्ण' खण्डकाव्य के द्वितीय सर्ग की कथावस्तु लिखिए। **(2019AD,AF,20MB,MG)**
2. 'कर्ण' खण्डकाव्य के आधार पर कर्ण का चरित्र-चित्रण कीजिए। **(2016CB,19AA,AC,AF,20MB,ME,MA)**
3. 'कर्ण' खण्डकाव्य के प्रथम सर्ग का कथासार लिखिए। **(2017AA,20MC,MD)**
4. 'कर्ण' खण्डकाव्य के आधार पर कुन्ती का चरित्र-चित्रण कीजिए। **(2016CC,CE,20MC)**
5. 'कर्ण' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग की कथा अपने शब्दों में लिखिए। **(2017AD,18HF,19AA,AE,20MA)**
6. 'कर्ण' खण्डकाव्य के आधार पर कर्ण द्वारा 'कवच–कुण्डल दान' का वर्णन कीजिए। **(2020MD)**

7. 'कर्ण' खण्डकाव्य की किसी प्रमुख घटना का वर्णन कीजिए। **(2020MG)**
8. 'कर्ण' खण्डकाव्य की कथावस्तु लिखिए। **(2020ME,MF)**
9. 'कर्ण' खण्डकाव्य के आधार पर उसके नायक का चरित्र–चित्रण कीजिए। **(2020MF)**

●●

8 कर्मवीर भरत

(लक्ष्मीशंकर मिश्र 'निशंक')

मेरठ, फर्रुखाबाद, पीलीभीत, रायबरेली जनपदों के लिए निर्धारित।

सारांश

चित्रकूट में भरत का मिलन तथा भरत की चरण-पादुका प्राप्त करना यही कथावस्तु का मूल उद्देश्य है। छः सर्गों में विभक्त कथा का सारांश इस प्रकार है–

प्रथम सर्ग (आगमन)

दशरथ के मरणोपरान्त गुरु के आदेश से दूत भरत और शत्रुघ्न को ननिहाल से 'राजगृहपुर' में बुलाने के लिए पहुँचता है। अचानक दूत के पहुँचने से भरत के मन में अनेक प्रकार की शंकाएँ होती हैं। वे बारी-बारी से सबका कुशल पूछते हैं, दूत के कथन से उन्हें सन्तोष नहीं होता। वे शत्रुघ्न के साथ अयोध्या के लिए प्रस्थान कर देते हैं। रास्ते में तथा अयोध्या पहुँचने पर शोक संतप्त अयोध्या नगर की दशा देखकर जो उनके मन में अन्तर्द्वन्द्व उठते हैं उन सबका प्रस्तुत खण्ड-काव्य के प्रथम सर्ग में चित्रण किया गया है। अन्त में भरत राजभवन में प्रवेश करते हैं किन्तु वहाँ भी आधी रात का सन्नाटा छाया है। पाले गये पक्षियों की चहचहाहट नहीं है। पिता भी नहीं दीख पड़ते, फिर वे उलटे पाँवों कैकेयी के भवन की ओर चल देते हैं–

अनुभव होता अर्धरात्रि का-सा सूनापन।
पालित पक्षी थक बैठे थे शान्त क्षुब्ध मन॥
देखा नहीं पिता को, चिन्ता मग्न हो गये।
उलटे पैरों लौट कैकेयी भवन को गये॥

द्वितीय सर्ग (राजभवन)

राजभवन में पहुँचने पर भरत सर्वप्रथम कैकेयी से मिलते हैं। कैकेयी राम वनगमन, पिता की मृत्यु और अपना पवित्र उद्देश्य भरत के समक्ष रखती हैं। भरत विषाद से भर जाते हैं। वे कैकेयी के तर्क से सर्वथा सन्तुष्ट नहीं होते और अपने को अपराधी तथा अभागा मानते हैं। इस सर्ग में कवि ने कैकेयी के चरित्र को विशेष महत्त्व दिया है तथा कैकेयी पर युग-युग से आरोपित कलंक को निर्मूल सिद्ध करने का प्रयास किया है। कैकेयी द्वारा राम को वन भेजने में लोकहित की भावना है। वह भरत को समझाती हैं–

एक ईश ने प्राणि मात्र को जन्म दिया है।
भेद भाव तो हमने अपने आप किया है॥
उन्हें उठाना क्या राजा का धर्म नहीं है।
गले लगाना क्या मानव का धर्म नहीं है॥
सबके सब बन जायँ राज पद भोगी।
तो विपन्न मानवता की रक्षा क्या होगी?

कैकेयी के तर्क को सुनकर और अपनी प्रतिक्रिया जता कर मन में धैर्य धारण कर साहस और शक्ति को समेट दोनों भाई बड़ी माँ के दर्शन के लिए वहाँ से चले जाते हैं। यही दूसरे सर्ग की कथा है।

तृतीय सर्ग (कौशल्या-सुमित्रा-मिलन)

तीसरे सर्ग में भरत का दोनों माताओं कौशल्या और सुमित्रा के स्नेह और वात्सल्य भरे मिलन का वर्णन है। इस सर्ग में भरत के अतिरिक्त कौशल्या, सुमित्रा, माण्डवी आदि की चारित्रिक विशेषताओं पर समुचित प्रकाश डाला गया है। कौशल्या और सुमित्रा ने भरत के चरित्र को और भी उदार, निष्कपट और त्यागी सिद्ध कर दिया है। कौशल्या भरत का उद्‌बोधन देते हुए कहती हैं–

वत्स! हृदय में दीन भाव अपने मत लाओ।
गत को भूलो वर्तमान को सफल बनाओ॥

और यही बात भरत द्वारा कैकेयी को दोषी ठहराने पर सुमित्रा भी दुहराती हैं–

कहा सुमित्रा ने 'बेटा क्यों' भूल रहे हो।
माँ के वरदानों को कह क्यों शूल रहे हो॥

फिर सुमित्रा के मुख से ही उर्मिला और माण्डवी की दशाओं का वर्णन है। अन्त में दोनों पुत्रों को गले लगाकर गुरु वशिष्ठ के पास भावी कार्यक्रम निर्धारित करने के लिए भेज देती हैं।

चतुर्थ सर्ग (आदर्श वरण)

चौथे सर्ग में भरत गुरु वशिष्ठ के यहाँ पहुँचते हैं। इसी सर्ग में सच्चे अर्थ में भरत की कर्मवीरता का निखार हुआ है। जब गुरु वशिष्ठ और मन्त्री सुमन्त उन्हें राजसिंहासन पर बैठने का आदेश देते हैं तो भरत राम को वन से लाने के अपने संकल्प और आत्मविश्वास को व्यक्त करते हैं। वे राज्यश्री से अपने को सर्वदा मुक्त रखना चाहते हैं–

रघुकुल में चल रही युगों से प्रथा हमारी।
ज्येष्ठ पुत्र ही होता शासन का अधिकारी॥
उसके रहते छोटा क्यों पाये सिंहासन।
राज्यश्री से रहा भरत को नहीं प्रोत्साहन॥

भरत का विचार सभी को पसन्द आता है। सभी लोग भरत के साथ राम को मनाने के लिए वन को प्रस्थान करते हैं। पहले तो भरत पैदल ही चलने को आगे-आगे तैयार होते हैं। बाद में जब माताएँ भी उतरकर पैदल चलने को तैयार होती हैं तो उनके कष्ट और आग्रह का विचार कर वे भी रथ पर बैठ जाते हैं।

पंचम सर्ग (वनगमन)

इस सर्ग में भरत के अयोध्या से प्रस्थान पर चित्रकूट तक पहुँचने की कथा का वर्णन है। इसके अन्तर्गत निषादराज की भक्ति और उनकी सेवा-भावना का सुन्दर चित्रण किया गया है। भरत की भ्रातृभक्ति और भाव-विह्वलता का विशद् वर्णन ही इस सर्ग की मुख्य कथावस्तु है। शृंगवेरपुर पहुँचने पर पहले तो निषादराज भरत को राम का विपक्षी मानकर उनका विरोध करने को सोचता है फिर भरत के स्वभाव तथा गुरु वशिष्ठ आदि गुरुजनों को साथ देखकर उसके विचार बदल जाते हैं और वह उनका स्वागत करता है। वहाँ से भरत सभी को साथ ले प्रयाग में भरद्वाज ऋषि के आश्रम में पहुँचते हैं और उनका दर्शन करते हैं। भरद्वाज ऋषि से आज्ञा लेकर पुनः राम के दर्शन के लिए तुरन्त वहाँ से चित्रकूट के लिए प्रस्थान करते हैं। चित्रकूट निकट आने पर जब तक वह वन जिसमें राम रह रहे हैं दिखलाई पड़ता है वे गुरु की आज्ञा लेकर रथ से उतर जाते हैं और दोनों भाई पैदल ही आश्रम की ओर चलने लगते हैं।

षष्ठ सर्ग (राम-भरत मिलन)

सेना सहित भरत को सहसा वन में आते देखकर एक भील ने रामचन्द्र जी को भरत-आगमन का समाचार सुनाया। लक्ष्मण का मन शंकित हुआ, परन्तु भरत का नाम सुनकर राम पुलकित होकर चरण-पादुका के बिना ही कुटी के बाहर आ गये। उन्होंने धूल-धूसरित भरत को अपने चरणों में नत देखा और फिर भरत को स्नेह सहित खींचकर गले लगा लिया। शत्रुघ्न ने राम और लक्ष्मण के चरणस्पर्श किये। इसके बाद दोनों भाइयों ने सीता के चरणों में शीश झुकाकर 'सदा सुखी जीवन' का आशीर्वाद प्राप्त किया।

गुरु का आगमन सुनकर राम उनके रथ के पास गये और आदर सहित आश्रम में ले आये। माताओं के चरण छूकर और सुमन्त से भेंट करके राम अति हर्षित हुए। तब वशिष्ठ जी से पिता-मरण की बात सुनकर 'हाय पिता' कहकर पृथ्वी पर गिर पड़े। गुरु के समझाने पर तर्पणादि कार्य करके निवृत्त हो गये।

चित्रकूट में राम के प्रेम में विभोर हुए उनके कई दिन बीत गये। चित्रकूट के वन उपवनों की प्राकृतिक सुषमा ने उनका मन मोह लिया था। भरत लज्जावश कुछ नहीं कह पा रहे थे। तब वशिष्ठ ने राम से कहा कि इनको यहाँ आये बहुत दिन बीत गये हैं, अब इन्हें समझाकर लौटा दो। तब अवसर पाकर भरत ने कहा कि मैं राम को छोड़कर अयोध्या नहीं जाऊँगा। मैं उनका प्रतिनिधि बनकर वन में निवास करूँगा। राम अयोध्या जायँ, सिंहासन सूना पड़ा है। तब कैकेयी ने राम से कहा– पुत्र! मैं इस दुःखमय नाटक की सूत्रधारिणी हूँ।

आप भरत के कहे अनुसार राज्य प्राप्त करके मेरे कलंक को मिटाओ। गुरु ने भी कैकेयी का समर्थन किया। कैकेयी के वचन सुनकर राम ने कहा कि माता! इसमें तुम्हारा दोष नहीं है, फिर भी मैं अयोध्या जाकर राज्य नहीं कर सकता। भरत धर्मनिष्ठ होकर भी प्रेम-सिन्धु में डूब रहा है। यदि वह कहे तो मैं अयश के सागर में डूब सकता हूँ, परन्तु कुल के आदर्शों को निबाहना ही चाहिए।

भरत ने कहा – हे प्रभु! मुझे आज्ञा दीजिये कि मैं नन्दीग्राम में कुटी बनाकर सिंहासन पर आपकी चरण-पादुकाएँ रखकर 14 वर्ष तक वनवासी की तरह निवास करूँ। मैं राम का प्रतिनिधि बनकर जनसेवा करता रहूँ। मैं आपकी पादुकाएँ लिये बिना नहीं जा सकता। आप मुझे 14 वर्ष की अवधि बीतने पर लौट आने का आश्वासन दीजिये। यह कहकर भरत राम के चरणों पर गिर पड़े।

राम ने अपनी चरण-पादुकाएँ दे दीं और सबको प्रेम सहित विदा किया।

भरत ने अयोध्या जाकर नन्दीग्राम में कुटी बनायी और सिंहासन पर राम की चरण-पादुकाएँ रख दीं। शत्रुघ्न भरत की आज्ञा से राज्य का कार्य चलाने लगे।

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

1. 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के किसी स्त्री-पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।
2. 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए। **(2017AA,AC,AG,19AB,AE,20MD)**
3. 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग की कथावस्तु संक्षेप में प्रस्तुत कीजिए। **(2020MB,MG)**
4. 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के प्रधान पात्र का चरित्रांकन कीजिए। **(2019AD,20MD,MB)**
5. 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के आधार पर कैकेयी का चरित्र-चित्रण संक्षेप में कीजिए। **(2016CE,17AG,20MC,ME,MA)**
6. 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के आधार पर राम-भरत मिलन का संक्षिप्त वर्णन कीजिए। **(2016CE,CF,20MC,MA,MF)**
7. 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के आगमन सर्ग की कथावस्तु लिखिए। **(2020ME)**
8. 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के आधार पर भरत की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए। **(2020MF)**

●●

9 तुमुल

(श्यामनारायण पाण्डेय)

वाराणसी, इटावा, बिजनौर, जालौन, बदायूँ जनपदों के लिए ।

सारांश

प्रथम सर्ग (ईश स्तवन)

प्रस्तुत खण्डकाव्य में कवि श्यामनारायण पाण्डेय ने प्रथम सर्ग मंगलाचरण के रूप में प्रस्तुत किया है तथा ईश्वर का स्तवन किया है तथा ईश्वर की सर्वव्यापकता का वर्णन किया है।

द्वितीय सर्ग
(दशरथ-पुत्रों का जन्म एवं बाल्यकाल)

इस सर्ग में कवि ने राजा दशरथ के चारों पुत्रों के जन्म का वर्णन किया है। ये चार पुत्र हैं– राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न। चारों बालकों का बचपन राजमहल में ही व्यतीत हुआ। उनकी बचपन की लीलाएँ इक्ष्वाकु वंश की मर्यादा को बढ़ाती हैं तथा राजमहल की शोभा को दुगुना कर देती हैं। महाराज दशरथ का यश संसार के कोने-कोने में फैला है, वे कर्त्तव्यपरायण, दानवीर तथा युद्ध विद्या में पारंगत हैं। युद्ध विद्या में उनकी समानता कोई नहीं कर सकता है। युद्ध में वे सदैव विजयी होते थे। राजा दशरथ नीतिज्ञ, सुख-शान्ति में विश्वास करनेवाले तथा सच्चरित्र थे।

तृतीय सर्ग (मेघनाद)

कवि ने इस सर्ग में मेघनाद के पराक्रम का वर्णन किया है। मेघनाद का तेज सूर्य के समान है। अपनी युवावस्था में उसने इन्द्र के पुत्र जयन्त को भी पराजित कर दिया था। पृथ्वी पर रहनेवाले सभी राजा मेघनाद के नाम से काँपते थे।

चतुर्थ सर्ग (मकराक्ष वध)

चतुर्थ सर्ग में मकराक्ष का वध तथा राजा रावण की चिन्ता का वर्णन कवि ने किया है। रामचन्द्र जी के तीखे बाणों के प्रहार से सभी राक्षस भागने लगे तथा मकराक्ष की मृत्यु हो गयी। मकराक्ष की मृत्यु का समाचार सुनकर रावण का मुख पीला पड़ गया तथा वह अति चिन्ता मग्न हो गया। मकराक्ष के वध के पश्चात् रावण ने मेघनाद को युद्ध में भेजने की योजना बनायी क्योंकि वह मेघनाद को भी अपने समान ही पराक्रमी तथा वीर समझता था।

पंचम सर्ग (रावण का आदेश)

पंचम सर्ग में रावण द्वारा मेघनाद की वीरता का वर्णन किया गया है। रावण मेघनाद की शक्ति को अजेय शक्ति समझता है, किन्तु युद्ध से अति चिन्तित है। रावण को चिन्तामग्न देखकर मेघनाद ने उसके चरणों का स्पर्श किया। रावण ने अपने मन की पीड़ा को मेघनाद के समक्ष इस प्रकार व्यक्त किया– ''हे पुत्र! तुम्हारे होते हुए सम्पूर्ण राज्य में युद्ध के भय से हलचल मच गयी है। हमें युद्ध में किसी भी प्रकार भयभीत नहीं होना है। राम से बदला न लेने में हमारी कायरता है, इसलिए हमारा आदेश है कि तुम युद्ध में लक्ष्मण को मृत्यु की गोद में सुला दो।''

इस प्रकार रावण ने मेघनाद के शौर्य की प्रशंसा करते हुए उसे युद्ध में भेजा। रावण को पूर्ण विश्वास है कि मेघनाद मकराक्ष वध का बदला लेकर शत्रुओं को परास्त अवश्य ही कर देगा।

षष्ठ सर्ग (मेघनाद प्रतिज्ञा)

मेघनाद सिंह की तरह गरजता हुआ युद्ध में विजय प्राप्ति की प्रतिज्ञा करता है। उसकी गर्जना से रावण का स्वर्ण महल भी हिल जाता है। मेघनाद ने कहा कि मैं राम और लक्ष्मण की शक्ति को चुनौती दूँगा और लंका को कष्ट में पड़ने से पहले ही बचा लूँगा। हे पिता! मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं अवश्य ही विजय को प्राप्त करूँगा। यदि युद्ध में विजयी न हुआ तो फिर कभी जीवन में युद्ध का नाम ही न लूँगा।

सप्तम सर्ग (मेघनाद का अभियान)

प्रस्तुत सर्ग में मेघनाद द्वारा युद्ध की तैयारी और युद्ध के लिए अभियान का वर्णन किया गया है। मेघनाद ने अपनी सेना को तैयार होने का आदेश दिया है और स्वयं भी वीर वेश धारण कर शस्त्रों से सुसज्जित हुआ है। मेघनाद के इस अभियान को देखकर देवता लोग भयभीत होने लगे हैं और उन्हें राम की चिन्ता होने लगी है। देवता ऐसा सोच रहे थे कि मेघनाद के सामने तो काल की भी नहीं चलेगी। देवता इस प्रकार परस्पर वार्ता कर ही रहे थे, तभी मेघनाद ने युद्धभूमि में भयंकर गर्जना की।

अष्टम सर्ग (युद्धासन्न सौमित्र)

इस सर्ग में युद्ध में लगे हुए लक्ष्मण का चित्रण किया गया है। लक्ष्मण ने जब मेघनाद का रण गर्जन सुना तो वे भी युद्ध के लिए तैयार हो गये तथा उनकी कपि सेना भी भयंकर गर्जना करने लगी। जब लक्ष्मण मेघनाद के सामने आये तो उसे वीर वेश में देखकर उसकी वीरता की प्रशंसा की। शत्रु के मुख से अपनी प्रशंसा सुनकर मेघनाद ने सोचा कि जरूर इसके पीछे कोई कपटभाव छिपा हुआ है।

नवम सर्ग (लक्ष्मण-मेघनाद युद्ध तथा लक्ष्मण की मूर्च्छा) मार्मिक स्थल

नवें सर्ग में लक्ष्मण का मेघनाद के साथ युद्ध का वर्णन है तथा लक्ष्मण के मूर्च्छित होने का प्रसंग है। मेघनाद ने लक्ष्मण के प्रश्नों के उत्तर दिये और उनकी वीरता की प्रशंसा की, साथ ही युद्ध के लिए तैयार होने के लिए कहा। यह सुनकर लक्ष्मण क्रोधित हो उठे और उन्होंने वीरतापूर्ण वचनों को कहा। उनकी वीरतापूर्ण वचनों को सुनकर मेघनाद हँस पड़ा। बाण वर्षा प्रारम्भ हो गयी, दोनों ओर से भयंकर युद्ध होने लगा। लक्ष्मण के शौर्य को देखकर राक्षस भागने लगे। मेघनाद ने वीर वाणी में उनको ललकार कर रोका। मेघनाद और लक्ष्मण में 'तुमुल' युद्ध हुआ। चारों ओर हाहाकार मच गया। लक्ष्मण को कुछ शिथिल देखकर मेघनाद ने लक्ष्मण के ऊपर शक्ति चला दी। लक्ष्मण मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़े। तब मेघनाद जय जयकार करता हुआ लंका की ओर चल पड़ा। इस प्रकार उसने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की।

दशम सर्ग (हनुमान द्वारा उपदेश)

दसवें-सर्ग में दुःखी वानर सेना को हनुमान जी द्वारा उपदेश दिया गया है। लक्ष्मण के शक्ति बाण लगने और उनके मूर्च्छित होने से देवताओं में खलबली मच गयी। वानर सेना रोने लगी। तब हनुमान जी ने उन्हें समझाया कि वीरों का इस प्रकार विलाप करना

शोभनीय नहीं है। लक्ष्मण केवल अचेत हुए हैं, अतः व्याकुलता त्याग कर युद्ध में बदला लेने के लिए तैयार हो जाओ। तब हनुमान जी के वचनों को सुनकर उनका दुःख दूर हुआ। उधर कुटी में बैठे हुए श्रीराम जी को अपशकुन होने लगे।

एकादश सर्ग (उन्मत्त राम)

कुटिया में बैठे हुए श्रीराम ने विचार किया कि आज व्यर्थ ही मन में व्यथा उत्पन्न क्यों हो रही है। मेरा मन सशंकित हो रहा है और मेरे पैर काँप रहे हैं। उसी समय सुग्रीव, अंगद, हनुमान आदि मूर्च्छित लक्ष्मण को लेकर राम के पास आये। लक्ष्मण की ऐसी दशा को देखकर राम की आँखों से अश्रुधारा बहने लगी।

द्वादश सर्ग (राम-विलाप और सौमित्र का उपचार) *(2019 AC, AD, AF)*

लक्ष्मण की ऐसी दशा देखकर राम विलाप करने लगे और कहने लगे कि "हे लक्ष्मण! तुम्हारी ऐसी दशा से मैं अत्यन्त दुःखी हूँ। हे धनुर्धर, तुम धनुष हाथ में लेकर फिर उठो, मैं तुम्हारे बिना जीवित नहीं रह सकता।" राम की ऐसी करुण अवस्था को देखकर हनुमान जी को सुषेण वैद्य को लाने का आदेश दिया। हनुमान जी क्षण भर में ही सुषेण वैद्य को ले आये। सुषेण वैद्य ने कहा कि "संजीवनी बूटी के बिना लक्ष्मण की चिकित्सा नहीं हो सकती।" संजीवनी बूटी लाने का कार्य भी हनुमान जी ने ही किया। संजीवनी बूटी के उपयोग से लक्ष्मण की मूर्च्छा समाप्त हो गयी तथा पुनः वानर सेना में प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी।

त्रयोदश सर्ग (विभीषण की मंत्रणा)

राम-लक्ष्मण वानर सेना सहित बैठे हुए थे कि तभी रामभक्त विभीषण ने आकर यह सूचना दी कि मेघनाद यज्ञ कर रहा है। यदि उसका यज्ञ पूरा हो गया तो राम की जीत किसी भी प्रकार नहीं हो सकती। अतः यज्ञ करते हुए मेघनाद पर आक्रमण करो। राम ने सेना को आक्रमण करने का आदेश दिया। राम के चरण-स्पर्श करके लक्ष्मण ने मेघनाद-वध करने की प्रतिज्ञा ली।

चतुर्दश सर्ग (यज्ञ विध्वंस और मेघनाद-वध)

चौदहवें सर्ग में मेघनाद के यज्ञ विध्वंस और मेघनाद वध का वर्णन है। उत्साह में भरे हुए लक्ष्मण वानर सेना को लेकर यज्ञस्थल पर पहुँचे। लक्ष्मण के तीव्र बाण प्रहार से मेघनाद का रुधिर पवित्र यज्ञ भूमि में बहने लगा। उधर वानर सेना ने अन्य यज्ञकर्त्ताओं का संहार किया वे सभी मेघनाद पर टूट पड़े। मेघनाद ने लक्ष्मण को यज्ञ-स्थल पर प्रहार करने के लिए धिक्कारा। एक बार तो लक्ष्मण के हाथ रुक गये, किन्तु विभीषण के द्वारा उत्साहित किये जाने पर लक्ष्मण ने भयंकर बाणों की वर्षा की। तीक्ष्ण बाणों के प्रहार से मेघनाद वहीं यज्ञभूमि में ही मारा गया। लक्ष्मण का सुयश चारों ओर फैल गया। देवता यह देखकर अति प्रसन्न हुए और जय-जयकार करने लगे।

इस प्रकार 'तुमुल' खण्डकाव्य की कथा चौदह सर्गों में विभक्त होकर समाप्त हुई।

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

1. 'तुमुल' खण्डकाव्य के आधार पर 'विभीषण की मंत्रणा' खण्ड का संक्षिप्त वर्णन कीजिए। **(2020MC)**
2. 'तुमुल' खण्डकाव्य के आधार पर उसके प्रधान पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए। **(2020MC)**
3. 'तुमुल' खण्डकाव्य के षष्ठ सर्ग मेघनाथ-प्रतिज्ञा की कथा अपने शब्दों में लिखिए। **(2018HF,19AA,20MD,MA)**
4. 'तुमुल' खण्डकाव्य के आधार पर लक्ष्मण का चरित्रांकन कीजिए। **(2016CE,CF,18HA,19AA,AC,AG,20MG,ME,MA,MF)**
5. 'तुमुल' खण्डकाव्य की कथावस्तु पर संक्षेप में प्रकाश डालिए। **(2016CE,17AA,AB,AD,20MB)**
6. 'तुमुल' खण्डकाव्य के नायक की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। **(2020MB)**
7. 'तुमुल' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग का कथानक लिखिए। **(2020MD)**
8. 'तुमुल' खण्डकाव्य का कथानक संक्षेप में लिखिए। **(2020MG,ME,MF)**

●●